बस्ना संकल्प

मासिक समाचार पत्र जनवरी, 2019

बरन संकल्प मासिक समाचार पत्र

RNI No. : JHAHIN / 2014 / 58757 (स्थापित : 1993) जनवरी 2019, वर्ष–5, अंक–2

सम्पादक एवं प्रकाशक बरन संकल्प
सचिव, बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
बालेश्वर प्रसाद, कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद–826001, ☎ 9431725382, 7717762093

सह–सम्पादक – **डा भुवनेश्वर मोदी,** पतरातु
☎ 9431534443

मुद्रक : बिपिन कुमार चौरसिया
प्रेस : बिपिन प्रिंटींग प्रेस, कतरास रोड, धनबाद, ☎ (0326) 2308009

स्वामित्व : **बरन संकल्प (एक निवंधित न्यास)**
प्रकाशन स्थान:कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 (झारखण्ड) E-mail : baransankalp@gmail.com

विषय सूची पृष्ठ

शुल्क ''बरन संकल्प'' के 01910100925352, UCO Bank, IFSC - UCBA0000191 के A/c में जमा करें। **न्यासी शुल्क 1200/–**

सम्पादकीय

मंदिरों में भक्ति के नाम पर प्रतिवर्ष करोड़ो–करोड़ के चढ़ावे किस काम के जब उनका उपयोग न जनहित में होता हो और न ही राष्ट्रहित में।

भक्ति हमें स्वहित से अधिक परहित की बात सिखलाती है। तुलसी ने मानस में लिखा है – ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमायी।।'' अर्थात् परहित जैसा कोई धर्म नहीं है और परपीड़ा अर्थात् दूसरे को कष्ट देने जैसा कोई अधम या नीच कर्म नहीं है। पर हम हैं कि स्वहित में परहित का बलिदान कर देते हैं। दान–धर्म का पाठ तो हमें राजा हरिश्चन्द्र, दानवीर कर्ण, महर्षि दधीचि, मयूरध्वज जैसे दानवीर सिखा गए। देश में दानवीरों की कमी कभी नहीं रही। आज भी कई ऐसे ध नाढ्य हुए जिन्हें जैसे ही आत्म–ज्ञान हुआ, अपनी करोड़ो–अरबों की संपत्ति लुटाकर सन्यासी हो गए। ऐसे में जीवन के एक कोने से यह भी आवाज आती है कि आम आदमी क्या कर्म–क्षेत्र से भागकर फकीर बन जाय। कर्मण्यता का पाठ पढ़ानेवाले श्रीकृष्ण तो ऐसा नहीं कहते। फिर इस तरह की बातें क्यों ?

मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं। बल्कि विचार यह है कि हम जीवन में व्यवसायी बुद्धि लेकर ही भगवान की भक्ति करते हैं। हम तीर्थो में जाते हैं और मन की मुराद पाने के लिए ही मनौतियाँ मनाते हैं। अगर मुराद पूरी हो गई तो अर्पण या चढ़ावे के रुप में स्वर्ण मुकुट, स्वर्णाभूषण या मोटी रकम उस मंदिर के मुख्य आराध्य को अर्पित कर संतोष की साँस लेते हैं। वर्ना मुराद पूरी न होने पर पुनः वहाँ झाँकने तक नहीं जाते हैं। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, महाराष्ट्र का साई शिरडी मंदिर, आन्ध्रप्रदेश का तिरुपति बालाजी मंदिर, केरल का तिरुअनंतपुरम का पद्मनामास्वामी मंदिर ऐसे मंदिर हैं जहाँ नगद कौन कहे सोने के ढेर लगे हुए हैं। इन मंदिरों के खजाने इतने भरे हुए हैं कि अगर स्वेच्छा से यहाँ के ट्रस्ट इन्हें सरकारी खजाने में डाल दें देश की कई परियोजनाएँ पूरी की जा सकती हैं। पर खेद जनक बात यह है कि न तो सरकार इसके लिए सक्षम है और न ही कोई ऐसा कानून ही है कि इन खजानों को सीज कर राज्य या देश की सरकार कोई सार्थक उपयोग कर सके। देश का कानून भी ऐसा है कि अगर कोई सरकार हिम्मत करे भी तो इसे धर्मनिरपेक्षता पर प्रहार मान लिया जाएगा। फिर इसका इतना बड़ा प्रोपगण्डा उड़ाया जाएगा कि सरकार की कुर्सी ही उलट जाएगी। ऐसे में साँप के मुँह में हाथ कौन डाले। यही कारण है कि प्रतिदिन इनके खजाने भरते चले जा रहे हैं और खाली होने का नाम नहीं लेते।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि मन–मुराद पूरा होने पर वे कौन हैं जो यहाँ लाखों–लाख के चढ़ावे चढ़ाते हैं। ये देश–विदेश में फैले धनाढ्य भक्त हैं जो सरकारी टैक्स चोर, मुनाफाखोर, जमाखोर, कालाबाजारी और बड़े–बड़े रिश्वत खोर या फिर ऊँची पहुँचवाले ठेकेदार होते हैं जो बैठे–बैठे करोड़ो–अरबों जमा करते हैं और भक्ति के नाम पर यहाँ दान करते हैं। एक ओर ये अपने उद्योगों की उत्पादित वस्तुओं पर मनमाना दाम रखकर ऊँचे दाम पर खरीदने के लिए गरीबों को बाध्य करते हैं, अपने मजूदरों को न्यूनतम से न्यूनतम मजदूरी देकर हाड़तोड़ मेहनत करवाते हैं, दूसरी ओर जमाखोरी और कालाबाजारी कर धन्ना सेठ बनते हैं। ये स्वर्ण मुकुट,हीरे के हार, कान की बाली और झूमके इन्हीं के यहाँ से चढ़ावे के रुप में आते हैं। ये पूजा और भण्डारा में लाखों खर्च करते है, पर दीन–दुखियों को और कंगाल बनाते हैं। विश्व में गरीबी, भूखमरी, भिखमंगी, बेरोजगारी जैसे कारनामें इन्हीं की देन है। इनके मायाजाल को भगवान भी नहीं तोड़ पाते, बल्कि खुद मंदिरों के शिकंजों में कैद रहते हैं। ऐसे मंदिर देश में दो–चार नहीं सैकड़ों है जो उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत के लगभग हर राज्य

के लगभगर हर शहर में फैले हैं। तभी तो किसी खुशामदी पंडित ने कहा है –

''विद्या ददाति विनियम। विनियात् ददाति पात्रताम्।
पात्रत्वा धन माप्नोति। धनात् धर्मः ततः सुखम्।।''

अर्थात विद्या विनम्रता देती है। विनम्रता से पात्रता बढ़ती है। पात्रता से धन प्राप्त होता है और धन की सुख भी देता है। अर्थात् सर्व तज धन अर्जित कर। अगर धन है तो सब सुख है। तब फिर क्यों नहीं धनवान धन से भगवान तक को खरीदने का प्रयत्न करेंगे ? भला हो धनवानों का।

बालेश्वर प्रसाद

बरनपुर में आरक्षण

शीर्षक देखकर रामभरोसे बरनवाल चौंक गए कि बरनपुर में आरक्षण किसलिए ? उन्होंने ट्रेन में, जहाज में आरक्षण सुना था। ये भी सुना था कि नौकरियों में निम्न जातियों को आरक्षण मिलता है। किन्तु बरनवालों को आरक्षण क्यों चाहिए ? वह खुद एक बड़ी पुश्तैनी संपत्ति और दुकान के मालिक थे। उनके बेटों और पोतों ने उसमें अपना योग देकर उसे और बढ़ाया था। 'यह बेरोजगारी क्या होता है भैया ?' उन्होंने लड्डू गोपाल बरनवाल से पूछा था – 'अरे अपने बाप–दादा का धंधा करो और मस्त रहो। ये नौकरी क्या चीज है। सारे नौकरियाहा आदमी महँगाई का रोना रोते रहते हैं। इसमें न पैसा है,न मजा। अपन तो बस जब मन करता है, दूकान जाते हैं। जब मन करता है वापस चले आते हैं। सरकार ने इधर एक पैसा दाम बढ़ाया नहीं कि हम दो पैसा बढ़ा देते हैं। बस हिसाब बराबर हुआ समझो।'

'आप राम भरोसे ही रह गए' लड्डू गोपाल बरनवाल उन पर तरस खाते हुए बोले – 'अरे, जो मजा नौकरी में है, वह व्यापार में कहाँ ? वहाँ आठ घंटे की नौकरी करो, बाकी समय निश्चिंत रहो। साल के 365 दिन में 100 दिन की छुट्टी मिलती है।'

'और तनख्वाह केतना मिलता है हो। रोज महँगाई का रोना रोते रहता है नौकरियाहा सब।'

'ए रामभरोसे बाबू ! आपको पता नहीं है कि नौकरी में केतना रोपया मिलता है। एगो मास्टर भी चालीस हजार गिनता है। आ पुरफेसर तो जइसे नहीं पढ़ाने के लिए लाख–डेढ़ लाख खींच लेता है हर महीने। डाक्टर–इंजीनियर की तनखा पूछबे मत कीजिए। वहाँ त ऊपरी आमदनी की गंगा बहती है। आजकल तो एगो सिपाही को भी पचीस–तीस हजार मिल जाता है।' सुरिन्दर बरनवाल अपना श्री–मुख खोल सुनाने लगे – 'और क्या बतावें रामभरोसे बाबू। आप जो बैंकवा में चपरासी की चिरौरी करते हैं, वो भी हर महीने आपसे ज्यादा रुपया गिनता है। ऊपर से महँगाई भत्ता, घर आ ड्रेस का भत्ता, दिवाली के सीजन में बड़का बोनस मिलता है। अईसही नहीं उ आपके ढोल जइसा पेट में ऊँगली कर किनारे कर देता है।'

' त का उ बड़का आदमी हो गया' राम भरोसे बरनवाल आपे से बाहर हो गए– 'उसको शायद पता नहीं है कि बैंक में मेरे लाखों रुपए हैं।'

'और जब वो रिटायर करेगा न, तो उसका खाता में पी.एफ. का लाखों रुपया आ जायेगा' सुरिन्दर बरनवाल मसखरी के अंदाज में बोले – 'उ आपसे बित्ता भर उपर दिखेगा।'

जब–जब जम्बूद्वीप के भरतखंड में चुनाव होने को होते हैं, बरनपुर में भी बवाल कटने लगता है। और, इस कस्बे के अधिकांश रहनुमा बनिया व्यापारी ठहरे। स्वयं को सनातन हिंदू धर्म का ठेकेदार समझने वाले ये लोग अंबानी–अडानी–हिंदुजा–जिंदल की तरह खरबपति या उद्योगपति भले न हों, कल्लू पासी या नन्नू मोची की तरह भूमिहीन अथवा दाने–दाने को मोहताज भी नहीं होते। सो यह मनरेगा के मजदूरों की तरह फटेहाल नहीं होता। न सही दूकान, तो एक ठेला ही निकाल कर उसमें अपनी दुकान सजा लेंगे। फल–सब्जी, श्रृंगार–सामग्री से लेकर चाट–गोलगप्पों तक के ठेलों पर इन्हीं का कब्जा

है। भयानक शीत–लहर हो या गर्म धूप–लू के थपेड़े अथवा भयंकर आँधी–बारिश के थपेड़े, अपने इस टूटपुंजिया दुकान के साथ सारी जिंदगी गुजार देते हैं, यही आस लिए हुए कि इस बरनपुर के बाजार में उनकी भी रामभरोसे बरनवाल जैसी बड़ी, भव्य दुकान होगी,जो ब्राण्डेड सामानों से भरी होगी। वे अपने बेटों को भी बचपन से ही बिना पढ़ाए–लिखाए उसी में जोत देते हैं। जिंदगी तो चल जाती है, मगर उसमें न तो संपन्नता होती है और न ही सम्मान। किसी टूटे–फटे, जर्जर घर अथवा किराए कि कोठरी में जिंदगी खप जाती है, बदहाली और बीमारी के बीच।

सुरिन्दर बरनवाल समझते हैं इस पीड़ा को। और इसलिए वह अपील करते नहीं थकते कि अरे बनियो ! बच्चों को पढ़ाओ। समाज में तुम निम्न स्तर पर हो, इसलिए आरक्षण के अधिकार के लिए आवाज उठाओ। मगर खाते–पीते लोग उनकी बात को हँसी में उड़ा देते। और आखिर वे ऐसा क्यों न करें ? पंडित–पुरोहित उनसे दक्षिणा वसूलते हैं। बाबू–साहब उनकी गद्दी पर बैठे उन्हें धन्य कर जाते हैं। छोटी जात के लोग और आदिवासी उनसे दूरी बनाकर रखते हैं। और वे तो उन्हीं को देखेंगे ना ! ठेला–खोमचा चलाने वाले या दूकानों पर छोटी नौकरी करने वाले वृहत् समुदाय के लोग दिखें तो कैसे ?

और ऐसे में वह राजनीतिक ओहदा चाहेंगे। कि कोई बरनवाल एम.वी., एम.एल.ए. हो जाए। अरे, जब आप उन्हें सहयोग–समर्थन नहीं देंगे, तो आप राजनीतिक रुप से बुद्ध–प्रबुद्ध बनेंगे कैसे ? बरनपुर का कोई भी छुटभइया नेता बंद की घोषणा करता है, तो दूकान बंद कर दुबक जाते हैं। कोई गुंडा टाइप नेता आता है और पार्टी के नाम पर बड़ा चंदा वसूल कर लेता है। धर्म के नाम पर तो खुशी–खुशी बड़ी रकम दे जाते हैं। मगर अपने भाई–बंदों के नाम फूटी कौड़ी नहीं निकलती।

'तो हम का करें सुरिन्दर बाबू' लड्डू गोपाल बरनवाल बोले – 'आपकी बात थोड़ी–थोड़ी समझ में आती है। मगर ऐसे में हमें करना क्या चाहिए ?'

'अपने लोगों को आगे लाइए। शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था कीजिए। जो आर्थिक रुप से कमजोर हैं, उनकी रुपयों–पैसों से मदद कीजिए।'

'इसकी का गारंटी है कि मदद करने से वो पढ़–लिख जाएँगे।' राम भरोसे बरनवाल मुँह बनाकर बोले – 'और कि एम.एल.ए. क्या मुखिया भी बन पावेंगे?'

'पहिलहीं बनिअउती देखने लगे रामभरोसे बाबू' सुरिन्दर जी हँस कर बोले – 'आप दूसरों को धर्म के नाम पर या पार्टी के नाम पर जो चंदा की रकम देते हैं, उसका कभी हिसाब मिला आपको ?'

चितरंजन भारती

कुछ छिटपुट......तुकबन्दियाँ

गुटका

नेता अफसर और किसान,
करते हैं जिसका सम्मान।
सेवन जिसका लेता जान,
फिर भी बेचे सभी दूकान।
शायद ये हैं बड़े महान,
खैनी, गुटका, बीड़ी, पान।

खिचड़ी

विद्यालय में जिसको खाकर,
कितने बच्चे हुए बिमार।
जिसके कारण होता रहता,
शिक्षा का है बंटाधार।
जिसके कारण कितने अफसर,
होते रहते माला–माल।
जिनके घोटालों की चर्चा,
संसद में हो सालों–साल।
आंगनबाड़ी से लेकर के,
स्कूलों तक जिसका राग।
जिसको कुत्ते भी ना खायें,
ऐसी खिचड़ी बनती आज।।

रामेश्वर प्रसाद बरनवाल
ग्राम+पो. – पुरैना
चनपटिया

गीता–सार
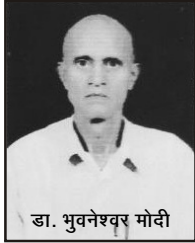
डा. भुवनेश्वर मोदी

अष्टदश अध्याय
मोक्ष सन्यास योग

गतांक से आगे ....

शूरवीरता, तेज, धैर्य, युद्ध कला में निपुण और अपलायनवादी, दान–धर्म और स्वामित्व भाव से प्रेरित रहना क्षत्रिय के स्वाभाविक लक्षण हैं –

''शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वर भार्वश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्''।।43।।

इसी तरह कृषि, गोपालन, व्यापार और सद्व्यवहार से वैश्य जाने जाते हैं जबकि उपरोक्त तीनों वर्णो के प्रति सेवा भाव के कारण ही शूद्र जाने जाते हैं–

''कृषि गौरक्ष्य वाणिज्यं वैश्यं कर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मक कर्म शूदस्यापि स्वभावजम्'' ।।44।।

वर्ण व्यवस्था का बड़ा ही विशद् और तर्क पूर्ण ढंग से श्री गोयन्दकाजी 'गीता तत्व विवेचनी टीका' में 633 से 636 पृष्ठ तक फूट प्रिंट में किया है जो देखने समझने और अनुकरण करने योग्य है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में अति प्राचीन काल से ही वर्ण–व्यवस्था कर्मो पर आधृत थी। किन्तु देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि कर्म को लोगों ने जातिगत व्यवस्था बनाकर रख दिया जिससे आज समाज में घृणा और कुव्यवस्था इस प्रकार समा चुकी है कि हमारी परंपरायें और मान्यतायें तार–तार होकर रह गई है। देश में और खासकर हिन्दू समाज में जातीय दंगा इसी वर्ण–व्यवस्था के टूटने का ही दुष्परिणाम है। वर्ना सच पूछा जाय तो कर्म के आगे न तो किसी वर्ण का व्यक्ति बड़ा है और न ही छोटा। हर किसी के कर्म की आवश्यकता एक दूसरे को पड़ती है और हर किसी वर्ण के कर्म का समान महत्व होता है। ब्राह्मण अगर बुद्धि से ज्ञान देता है तो क्षत्रिय का कर्म अपनी शक्ति नीति और शौर्य से तीनों वर्ण के नागरिकों की रक्षा करना है। वैश्य परिवार, समाज और राष्ट्र के पालन में योगदान देता है तो शूद्र अपने शारीरिक श्रम से तीनों वर्ण के लोगों (भले ही मजबूरी वश उसे मजदूर बनना पड़ता है) की सेवा कर देश के उत्पादन में सहयोग करता है। ऐसे में अभिमानवश भले ही कोई अपने आप को श्रेष्ठ मान बैठे पर श्रीकृष्ण की दृष्टि में सभी अपने–अपने स्वाभाविक कर्म से जुड़े है –

''स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्म निरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणुः ।।45।।

अर्थात् हे अर्जुन ! हर व्यक्ति अपने–अपने कर्म में तत्पर है और कर्म की पूजा करते हुए भगवद् प्राप्ति जैसी परम सिद्धि को प्राप्त करता है। पर भगवद् प्राप्ति जैसी परम सिद्धि मनुष्य को कैसे प्राप्त होती है, उसे तुम सुन। इसके उपरान्त भगवान कहते हैं –

''यतः प्रवृतिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः'' ।।46।।

अर्थात् परमपिता परमेश्वर ने ही सारे प्राणियों की सृष्टि की है। उसी सृष्टि से यह संसार भरा है। उस सृष्टि के अन्तर्गत ही हर प्राणी अपना स्वाभाविक कर्म कर रहा है और परम सिद्धि या परमेश्वर को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है। यहाँ एक कथा संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत करना चाहूँगा जो इस प्रकार है –

एक बार अर्जुन को ऐसा अहं हो गया था कि भगवान का सबसे बड़ा भक्त मैं ही हूँ। भगवान अर्जुन के इस भाव को ताड़ गए। उनका अभिमान दूर करने के लिए श्रीकृष्ण स्वयं को और उन्हें भी ब्राह्मण भेष में शाम के समय एक वृद्ध के द्वार पर ले गए। वह वृद्ध ब्राह्मण था और असहाय होकर मृत्यु शय्या पर पड़ा था। उसकी वृद्धा पत्नी उसकी सेवा में लगी थी। ब्राह्मण रुप में श्रीकृष्ण ने उससे भिक्षा की याचना की। इस पर वह वृद्धा ब्राह्मणी ने अति विनम्र भाव से कहा – ''ब्राह्मण देवता! मेरे पति वृद्ध हो गए हैं। मैं अभी इनकी सेवा में रत हूँ। इनसे निपट कर मैं सांध्य दीपक–बाती कर लूँ। इसके बाद आप दोनों को भिक्षा देकर विदा करुँगी। कृपया तब

तक प्रतीक्षा कीजिए।'' इस पर दोनों भगवान और भक्त कुछ पल के लिए ठहर गए। उस वृद्धा ने पहले पति की सेवा की। फिर सांध्य–दीपक जलाकर भगवान को प्रणाम किया और क्षमा–याचना के साथ भिक्षा देकर दोनों को विदा किया।

तदुपरान्त दोनों क्रमशः एक गाँव के राजा के पास, फिर एक युवक माँस व्यापारी के पास और अन्त में एक मजदूर के पास भिक्षा याचना के लिए गए। तीनों ने उसी ब्राह्मणी जैसा ही विनम्र भाव से एक ही तरह की बातें कही। राजा ने कहा – ''पहले गाँव का समाचार जान लूँ। फिर संध्या बन्दन के बाद भिक्षा प्रदान करुँगा।'' कसाई युवक ने कहा – ''पहले स्नान–ध्यान कर लूँ उसके बाद भिक्षा दूँगा और और मजदूर ने कहा – ''पहले हाथ–पैर धोकर भगवान की प्रार्थना कर लूँ, उसके बाद भिक्षा दूँगा। उन तीनों के अनुसार ही अर्जुन श्रीकृष्ण ने प्रतीक्षा की और भिक्षा लेकर जब चले तो भगवान ने उनसे कहा – ''अब बोलो पार्थ ! क्या तुम्हीं मेरा भक्त हो या ये चारों भी अपने–अपने कर्मानुसार मेरे भक्त हैं ? इस पर अर्जुन चुप हो गए। फिर प्रभु बोले – ''मेरी दृष्टि में ये चारों तुमसे कम बड़ा भक्त नहीं है। तुम्हें अपने क्षत्रियत्व कर्म पर अभिमान है। पर ये भी अपने–अपने वर्णानुसार अपने–अपने कर्म से जुड़े हैं और अपने–अपने ह्रदय में मुझे बसाकर गृहस्थ जीवन जी रहे हैं। अतः ये भी कर्म संन्यासी हुए। क्योंकि ये अपने–अपने वर्णाश्रम धर्म का बिना त्याग किये ही अपने–अपने कर्मो से जुड़े हैं। 46वें श्लोक में श्रीकृष्ण के कहने का भाव यही है।

पुनः श्रीकृष्ण कहते हैं कि अपने–अपने वर्णानुसार कर्म ही श्रेष्ठ होता है। ये चारों वर्ण वाले अगर अपना–अपना कर्म त्याग कर और दूसरे का कर्म श्रेष्ठ समझकर अपना लेते हैं तो भी उनका अपनाया गया अन्य कर्म उनके वर्ण धर्मानुसार न होने से श्रेष्ठ माना नहीं जा सकता। अतः अपने–अपने स्वभावानुसार नियत किया हुआ जो कर्म है उसे ही अपना धर्म समझकर करना चाहिए। इसमें पाप छुपा रहने पर भी पाप दोष से मुक्त माना जाएगा।

अतः हे कौन्तेय ! यद्यपि अग्नि में छुपे धुएँ की तरह हर वर्ण के लोगों के कर्म में कुछ न कुछ दोष छुपा रहता ही है, फिर भी अपने सहज कर्म का त्याग नहीं करना चाहिए –

''सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः'' ।।48।।

इस तरह ''कर्मयोग रुप का तत्व समझाने के लिए ही स्वाभाविक कर्मो का स्वरुप और उनकी अवश्य कर्त्तव्यता का निर्देश करके तथा कर्म योग में भक्ति का सहयोग दिखलाकर उसका फल भगवद् प्राप्ति बतलाया है।'' (देखें गीता तत्व विवेचनी टीका, पृष्ठ संख्या 640, संबंध अवतरण)

अब श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि कर्म बंधन से मुक्त होकर परम पिता परमेश्वर को प्राप्त करने का यथार्थ ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है। इसका एक उपाय यह है कि मनुष्य सबसे पहले आसक्ति रहित बुद्धिवाला बने और भोग की सारी सांसारिक वस्तुओं को त्यागकर अन्तःकरण को शुद्ध कर सांख्य योग का संन्यास को अपना ले तभी वह परम पिता को प्राप्त कर सकता है। यही ज्ञान योग की चरम स्थिति होती है जिसे नैष्कर्म्य सिद्धि कहते हैं। यह सिद्धि कैसे प्राप्त की जा सकती है, भगवान कुन्ती पुत्र अर्जुन को समझाते हैं कि ऐसे लोग जो –

1. विशुद्ध बुद्धिवाले हो।
2. शुद्ध सात्त्विक भोजन नियमित रुप से करने वाले हो।
3. विषय–वासनाजन्य बातों का त्याग करने वाले हो अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों रुप में विशुद्ध भाव रखते हों।
4. एकान्त और शुद्ध देश (स्थान) के वासी हों।
5. जिसमें सात्त्विक धारणा शक्ति छुपी हो और अन्तः करण से शुद्ध और पवित्र हों।
6. इन्द्रिय निग्रही हों।
7. जिसके वश में वाणी और शरीर दोनों हों।
8. जो राग–द्वेष से बिल्कुल दूर हों।

9. जिनने दृढ़ इच्छा शक्ति से वैराग्य ग्रहण कर लिये हों।
10. जिनने काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार तथा सांसारिक भोग की वस्तुओं का बिल्कुल त्याग कर दिया हो।
11. जो निरंतर भगवान के चरणों में ध्यान लगाये रहते हैं।
12. और जिनने ममता रहित एवं शान्त चित्त से भगवान के सच्चिदानन्द स्वरुप को सदा–सदा के लिए हृदय में बसा लिये हों।
ऐसे पुरुषों को ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।
(देखें श्लोक संख्या 51, 52, 53)

परा भक्ति अर्थात् परम सुन्दर या आत्म कल्याण करने वाली भक्ति कैसे प्राप्त होती हैं, श्रीकृष्ण कहते हैं –

''ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्.क्षति।
समः सर्वषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्'' ।।54।।

अर्थात् फिर तो वैसा ब्रह्मभक्त मात्र ब्रह्म (मुझमें अर्थात् श्रीकृष्ण में ही) एकीभाव से स्थित हो जाता है और सदा प्रसन्न रहकर कभी किसी के लिए शोक नहीं करता है और न ही संसार में किसी की इच्छा या प्रतीक्षा करता है। वह सारे जगत के चर–अचर प्राणियों के प्रति सदा समान भाव रखते हुए परमानद की प्राप्ति करता है। कबीर ने इसे इस रुप में कहा है–

''जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जल ही समाना, यह है अकथ कहानी''।।

फिर तो उस परा शक्ति का ऐसा प्रभाव उस व्यक्ति पर पड़ता है कि वह तत्व ज्ञाता बनकर मुझे सही– सही ढंग से जान जाता है। फिर तो वह मुझमें प्रवेश कर जाता है। अर्थात् चिर समाधि ले लेता है। उसके प्राण ब्रह्म में विलिन हो जाते हैं। वह इच्छा मृत्यु को प्राप्त करता है। महाराज भीष्म पितामह को प्राण त्याग के पूर्व ऐसी ही भक्ति और शक्ति प्राप्त हुई थी। (देखें गीता तत्व विवेचनी टीका, पृष्ठ संख्या 629 और631 तक)।

मनुष्य अगर चाहे तो भगवद् परायण या भगवान के अधीन होकर कर्म योग में लीन होकर भी सदा मेरी ही कृपा पर आश्रित रहकर मुझ अविनाशी परमपद को प्राप्त कर सकता है।

''सर्व कर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद् व्यापाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्'' ।।56।।

और इसी हेतु को समझाने के लिए ही भगवान अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन ! तुम भी अपने सारे कर्मो को मुझे ही अर्पित कर दें। अर्थात् तेरा यह युद्ध–कर्म तेरा नहीं, बल्कि मेरा मानकर मुझे ही अर्पित करते हुए शान्त चित्त से योग द्वारा मेरा ही अवलम्बन कर मेरा ही वत्सल होकर निरंतर मुझमें चित्त का रमण (युद्ध कर्म) कर। और तब इसका सुपरिणाम क्या होगा, सुनाते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं –

''मच्चितः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिव्यसि।
अथः चेन्त्वमहङ्.क्रनान्न श्रोयसि विनङ्.क्ष्यसि'' ।।58।।

अर्थात् अगर तुम (अर्जुन) मुझमें समर्पित होकर उपरोक्त ढंग से कर्म योग में लीन हो जाते हो तो मेरी कृपा से ही तुम संसार के सारे संकटों को (अर्थात् कर्मक्षेत्र में आने वाली बाधाओं को) सहज में ही झेलते हुए पार उतर जाओगे। किन्तु यदि अहंकार ने तुझे आ घेरा या फिर मेरे इन उपदेशों की उपेक्षा कर तुम भाग खड़े होते हो तो स्वयं को नष्ट कर ही लोग, तुम्हारे परमार्थ के लिए किये गए सारे कर्म भी भ्रष्ट हो जायेंगे। अर्थात् अगर अर्जुन श्रीकृष्ण को समर्पित कर युद्ध करते हैं तो हर पल वे उनके साथ रहकर सारी विपदाओं से बचाते रहेंगे वर्ना अर्जुन का विनाश निश्चित है, उन्हें कोई बचा नहीं सकता है।

फिर भगवान कहते हैं – ''तुम स्वभाववश क्षत्रिय होने के कारण युद्ध करने वाले हो। पर अपनों को सामने खड़ा देख और उन्हें हितैषी जान अगर तुम युद्ध नहीं करते हो तो तेरा यह अहंकार मिथ्या साबित होगा और फिर तो तेरा पतन निश्चित है। क्योंकि हे कौन्तेय ! एक मात्र मोह ही है जिसके वशीभूत होकर तुम युद्ध करना नहीं चाहते हो। पर मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि तेरा पूर्व कर्म ही तेरे स्वभाव को बताने

वाला है कि तुम युद्ध उन्मादी रहे हो। अर्थात् इसके पूर्व भी तुमने इन स्वजनों से कई युद्ध किए हैं। ऐसे में स्वाभाविक कर्म से बँधे होने के कारण परवश होकर ही सही, तुम्हें तो युद्ध करना ही पड़ेगा। इसके बावजूद बात बनती न देख अन्तर्यामी भगवान अपनी योगमाया और शक्ति की याद दिलाते हुए कहते हैं (विराट् रुप दिखाकर श्रीकृष्ण अर्जुन को अपनी शक्ति का एहसास करा चुके हैं) कि यह नश्वर शरीर एक यंत्रके समान है। जैसे यंत्र बनता–बिगड़ता रहता है और उसका भी अन्त निश्चित है, ठीक उसी प्रकार इस शरीर का हाल है। सारे जगत के प्राणी इसी यंत्र पर आरुढ़ हैं। और, मैं ही वह शक्ति हूँ जो सारे प्राणियों को अपनी माया से यंत्र की तरह नचाते रहता हूँ। अर्थात् कोई भी प्राणी स्वाधीन न रहकर मेरी ही इच्छा के अधीन है। अतः परमेश्वर (मैं) सारे प्राणीयों के ह्रदय में बसा हूँ'' –

''तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्ति स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्''
।।62।।

अर्थात् 'सर्वश्व त्याज्य मम शरणं आ गच्छ' का सिद्धान्त निरुपित करते हुए श्रीकृष्ण बार–बार अर्जुन को समझाते हैं कि हे अर्जुन ! हे भारत !! तुम उसी परमेश्वर की शरण में (मेरी ही शरण में) आ जा। क्योंकि उसी की कृपा से परम शान्ति या परम धाम को प्राप्त करेगा। चूँकि तुम पाप कर्म से बचने के लिए ही युद्ध करना चाहते हो, पर तुम्हें कहीं शान्ति और परम ध ााम प्राप्त होने वाला नहीं हैं। क्योंकि कर्म विमुख होकर ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता है – 'चित्रलेखा' में गीतकार ने लिखा है –

''संसार से भागे फिरते हो, भगवान को क्या तुम पाओगे? इस जन्म में जिसे अपना न सके, उस जन्म में भी पछताओगे''।।

इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म योग को प्रेरित कर परमेश्वर की शरण में आने की आज्ञा देकर इस उपदेश का उपसंहार करते हुए कहते हैं –

''इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु''।।63।।

अर्थात् हे अर्जुन ! मैंने तुम्हें गोपनीय से भी अति गोपनीय ज्ञान दिया है। अब जैसी तुम्हारी इच्छा है, वैसा विचार कर तुम उनका उपयोग कर। ज्ञान, भक्ति अथवा कर्म योग या फिर अनेक तरह के योगों में से किसी भी योग को अपनाकर तुम उसका पालन करो। उसी से तेरा जीवन संवर जाएगा। पर अर्जुन थे जो अब भी अपने आप को असमर्थ समझकर किंकर्त्तव्य विमूढ बने हुए थे। ऐसे में भक्त वत्सल भगवान स्वयं ही उन पर दयाकर पुनः अतिगोपनीय रहस्यमय और हितकारी वचन सुनाने लगे –

क्रमशः ....

शेष अगले अंक में।

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़
पतरातू, जिला – रामगढ़

संदेश

मैं विनोद कुमार बरनवाल बरन संकल्प के माध्यम से श्रीमती सुभद्रा गुप्ता बरनवाल जी को ह्रदय से शुक्रिया अदा करता हूँ कि उनके प्रेम भाव के कारण उनके द्वारा रचित कविता जैसे – पोखरण का परमाणु परीक्षण, भारत की धरती पर विचरन, नवयुग का निर्माण जैसे कई कविता, साथ ही कहानियों में नीम का पेड़, मंजिल, अपहरण जैसी रचना को पढ़ कर आत्म विभोर हो गया। मैं भगवान से सदा मनाता हूँ कि वे स्वस्थ एवं निरोग रहे उनकी आयु लम्बी हो जिससे आगे भी हमें उनके द्वारा रचित उत्कृष्ट रचना का रसपान करने का सौभाग्य मिलता रहे।

विनोद कुमार बरनवाल
राज ग्राउण्ड, झरिया

बेचैन जिन्दगी

भाग – 12

प्रिय पाठकों !

पिछले भाग में आपने देखा होगा कि पत्नी सोनमतिया देवी के साथ त्रिभुवन बाबू की तीर्थयात्रा से दोनों को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। मूढ़ पत्नी ने देश दुनिया को जरुर देखा, पर अन्य यात्रियों की जोड़ी के अच्छे चरित्र की थोड़ी भी अगर नकल की होती तो शायद दोनों पति–पत्नी के बीच की कटुता बहुत हद तक धीरे–धीरे दूर हो सकती थी। पर वह ऐसी हठी महिला निकली जो सुधरना जानती ही नहीं थी। सबसे बड़ी कमजोरी उस महिला की यह थी कि उसे सिर्फ छोटी बेटी और दामाद पर ही विश्वास था और त्रिभुवन बाबू को सबसे निकृष्ट मर्द समझती थी। ऐसे दाम्पत्य सुख के बीच बनी दूरी भला कैसे सिकुड़ सकती थी। इसी क्रम के बीच–बीच में पैसे के लिए सविता और श्याम सुन्दर के आ जाने से बुझती चिनगारी फिर सुलग उठती और फिर वही पुराना तू–तू, मैं–मैं दोनों पति–पत्नी के बीच शुरु हो जाता। इसी से ऊबकर उन्होंने उस जेठ की गर्मी में चुपके से तीर्थाटन के नाम पर समय काटने और मानसिक तनाव दूर करने के लिए हरिद्वार की ओर रुख कर लिया जहाँ से वे पन्द्रह दिनों तक उत्तराखण्ड के चारों धाम की यात्रा कर पुनः वापस हरिद्वार आ गए। अब आगे देखते जाइये कि क्या होता है ....।

हरिद्वार लौट आने के बाद त्रिभुवन बाबू ने दो– चार दिन ही सही, ऋषिकेश में रहकर दो–चार दिन का सत्संग करना चाहा। वे चलकर पैदल लक्ष्मण झूला चढ़कर उस पार ऋषिकेश पहुँचे। यहाँ गंगा हिमालय की बिल्कुल संकरी घाटी को पारकर नीचे उतरती है और धीरे–धीरे बढ़ती हुई लगभग पच्चीस–तीस किलोमीटर चलकर हरिद्वार जा पहुँचती है। भले ही धारा हरहराती हुई नहीं पर इसका पाट चौड़ा हो गया है। यहाँ स्नान करने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। यात्री यहाँ स्नान कर आत्मिक सुख पाते हैं। जून–जुलाई के महीने में भी इसके जल में शीतलता रहती है और अगर बरसाती ठण्डी हवा बहे तो कँपकपी तक लगा देती है। वर्षा ऋतु जल प्रवाह बढ़ जाने से अनजान यात्रियों के लिए खतरनाक भी बन जाती है। हरिद्वार में तो मुख्य गंगा गर्मियों में सूख जाती हैं, क्योंकि इसकी मुख्य धारा को रोककर कई शाखाओं में नहर के रुप में बाँट दिया गया है। फिर भी हर नहर में गंगा जल ही प्रवाहित होते रहता है। इसी से हरकीपैड़ी में स्नान के अतिरिक्त कहीं और आनन्द नहीं मिलता है। पर ऋषिकेश में यह बात नहीं है। वहाँ गंगा का वास्तविक प्राचीन रुप आज भी विद्यमान है।

ऋषिकेश के एक आश्रम में कई दिनों से श्रीराम कथा चल रही थी और उस दिन इसका अंतिम काण्ड उत्तरकाण्ड में काग–भुशुण्डि का संवाद चल रहा था। कथा वाचक राम के परब्रह्म होने की कथा काग भुशुण्डि के शब्दों में श्रोताओं को सुना रहे थे। बीच–बीच में संगीतज्ञों द्वारा रामभजन गाये जा रहे थे। यहाँ पर त्रिभुवन बाबू चुपचाप एक तरफ कथा सुन रहे थे और कुछ शान्ति का लाभ पा रहे थे। उनका दुर्भाग्य यह रहा कि वे पूरी कथा सुन नहीं पाये। फिर भी दो–तीन दिन रहकर जो सुख पाया उसकी कोई तुलना नहीं थी –

''सात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरै तुला एक अंग।
तुलै न ताहि सकल जिमि, जो सुख लभ सत्संग।''

उन्हें यह पद सही जान पड़ा।

चौथे दिन से वही मानसिक उलझन शुरु हुआ। ''ज्यों–ज्यों सुरभि भजत चाहत, त्यों–त्यों उलझत जात'' वाली कहावत शुरु हो गई। अब करें तो क्या करें! जाएँ तो कहाँ जाय। फिर भी वे अभी बाहर रहना चाह रहा था और इसी निश्चय के साथ वे दिल्ली को पुनः कूच कर गए।

दिल्ली पहुँचने के क्रम में वे इस दुविधा में पड़ गए कि अब कहाँ ठहरा जाय। होटलों में ठहरकर वे आराम से समय बिता सकते थे। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। पास में तो बहुत कुछ था नहीं। इसी से शाम ढलते–ढलते वे एक गुरुद्वारा में जा पहुँचे। यहाँ उन्हें आश्रय मिल गया। रात को लंगर का प्रसाद पाकर एक तरफ अतिथिशाला में लुढक गए। दूसरे दिन से उनका भटकाव जीवन प्रारंभ हुआ। दिन भर फल–फूल खाकर समय बितावें। पर शाम को किसी गुरुद्वारे में ही आश्रय लें। दिल्ली में गुरुद्वारों की न तो कमी है और न ही लंगर का। कभी–कभी दिन को भी लंगर का प्रसाद ले और सारा दिन दर्शनीय स्थलों का चक्कर काटते रहें – कभी बस से तो कभी टेम्पू से। कभी–कभी पैदल ही दो–चार किलोमीटर मार्च कर लें। कुतुबमीनार, गाँधीजी का राजघाट, नारायण स्वामी मंदिर, बिड़ला मंदिर, देहलवी माँ का मंदिर, लालकिला, राष्ट्रपति भवन, इण्डिया गेट कहाँ तक गिनाया जाय। हर जगह दर्शकों की भीड़ में भी अकेले दर्शक बनकर घूमते रहे। न तो रहने–खाने की चिंता और न ही घर–द्वार का मोह। मन कहे कि ऐसा होता कि जीवन की गाड़ी चलते–चलते फैल हो जाती तो कितना अच्छा होता। कौन मेरे लिए यहाँ रोने बैठा है। जब तक जिन्दा हूँ, कभी चैन से दो रोटी मिलनेवाली नहीं। कम से कम संसार से बेडा तो पार उतर जाय। पर ऐसा संभव भी नहीं हो रहा था। शरीर थक चुका था। जीवनमें कभी इतना पैदल चला नहीं था और न ही फकीरी ही सवार हुई थी। ऐसे में अचानक दिनचर्या बदल जाने से रक्त चाप घट गया और एक दिन तो चक्कर खाते– खाते बचे। सुस्ताने के लिए वे एक पार्क में एक पेड़ की शीतल छाया में जा बैठे। जून–जुलाई में तो ऐसे ही उमस की भीषण गर्मी पड़ती है और यहाँ तो दिल्ली में गरमी हाल को बेहाल करनेवाली थी। थोड़ी ही देर में उन्हें नींद आ गई और कब सूर्य ढल गया, उन्हें पता नहीं चला। अचानक जब नींद खुली तो चारों ओर रंग–बिरंगी लाइट, चमकती नजर आयी। हड़बड़ा कर उठे और पार्क के गेट की ओर भागे। संयोग ऐसा था कि अभी उसका गेट बन्द नहीं हुआ था वर्ना रात भर पिंजड़े में फँसे चूहे की तरह उसी में बन्द रह जाते। यहीं उन्होंने घर लौटने का निश्चय कर लिया और दूसरे ही दिन घर के लिए प्रस्थान कर गए। इस तरह महीना भर तो नहीं, फिर भी लगभग पच्चीस दिन तक बाहर की हवा खाने के बाद जब घर लौटे तो यहाँ का नजारा ही कुछ और मिला।

पर, इसके पहले क्या हुआ, थोड़ा–सा संक्षिप्त वर्णन सुनिए। जब वापसी ट्रेन से त्रिभुवन बाबू घर को चले आ रहे थे तो उनके कम्पार्टमेंट में एक युवक मोबाइल पर 'चित्रलेखा' फिल्म का एक गीत सुन रहा था। लता मंगेशकर जी के स्वर में गाया गया यह गीत बड़ा ही मधुर और शिक्षाप्रद उन्हें लगा। गीत के बोल थे –

''संसार से भागे फिरते हो, भगवान को क्या तुम पाओगे?
इस जन में जिसे अपना न सके, उस जनम में भी पछताओगे।''

इस पूरे गीत को उन्होंने बड़े ध्यान से सुना। उन्हें लगा जैसे यह गीत उन्हें ही इंगित करके गाया जा रहा है। इसी गीत पर वह मन ही मन आत्म मंथन करने लगे। क्या मैं ही दोषी हूँ। मेरा घर से रुठकर निकलना और पत्नी को बिना कोई सूचना दिये लगभग महीना भर गायब रहना, इसमें क्या मेरा ही दोष है ? क्या वह घर पर मानसिक तनाव पैदा नहीं करती है ? क्या वह बेटी के बहकावे में आकर मुझसे हमेशा गाल फुलाये नहीं रहती है? ऐसे में क्या मुझे ऊबकर आत्महत्या कर लेनी चाहिए? ऐसे अनेक प्रश्न उनके दिमाग में चक्कर काटने लगे। तभी उन्होंने चलती ट्रेन में खिड़की से कुछ दूर मैने के एक जोड़े को आपस में लड़ते देखा। ओह ! तो क्या मनुष्य से इतर प्राणियों में भी विवाद होता है ? भला इन्हें कौन–सी धन जमा करने की चिन्ता होती है ? ये तो केवल पेट भरने और संतान पैदा करने से ही मतलब रखते हैं। तो फिर ये आपस में क्यों लड़ते हैं ?

इसका अर्थ है कि अस्तित्व की लड़ाई हर प्राणी में होती है। अब घर जाकर क्या करुँगा। इतना तो निश्चय है कि सोनमती मुझसे खुले मुँह बात नहीं करेगी। संभव है कि वह खाने को भी न दे।तब तो मुझे फिर से रोटी सेंकनी पड़ेगी। खैर जो भी हो, पर निश्चय है कि अगर इस बार भी वह न संभली तो मैं गृह–त्यागी सन्यासी बन जाऊँगा और फिर घर वापस कभी नहीं आऊँगा, इसी दृढ़ संकल्प के साथ वे घर पहुँचे। पर संकल्प लेना अलग बात है और दृढ़ता पूर्वक उसका पालन करना अलग बात। अब तक वे गृह त्यागी बने नहीं थे और न ही साधु–संतों की संगति ही की थी। ऐसे संन्यास जीवन की तकलीफ और कष्ट को याद कर मन डोल जाता था। फिर भी स्टेशन पर उतरकर वे धीरे कदम से चलते हुए घर तरफ बढ़े। चेहरे पर उदासी और दाढ़ी बढ़ी हुई। देह पर वस्त्र के सिवा कुछ नहीं था। जो भी ओढ़ना–बिछावन यात्रा के क्रम में खरीदा था, उसका गट्ठर बाँधकर चलती ट्रेन में ही छोड़ दिया। अभी सूर्यास्त ढला ही था और दिन रहते भारी मन से दरवाजे तक आये। पत्नी बाहर बरामदे पर बैठी थी। देखते ही मुँह फेर ली, मानों कोई अजनवी किसी से मिलने घर पर आया हो। उसकी मूरत देखते ही अनुमान सच लगा – श्रीमती को मेरे घर से दूर रहने का कोई गम नहीं है। भीतर गये तो बेटी सविता झाड़ू लगाते मिली। वह भी कुछ नहीं बोली। बेचारे चुपचाप कपड़े उतारकर हाथ–पैर धोकर कपड़े बदले और जैसे–तैसे बेड पर चित्त पड़ गए। छत की ओर निहारते–निहारते कब नींद आ गई, उन्हें पता नहीं। अचानक किसी की आवाज से नींद खुली। देखा कि सामने सविता लोटा पानी और रोटी– सब्जी लेकर पुकार रही है – ''पापा खा लीजिए''। जैसे ही आँखे खुलीं, छोटे से टेबुल पर रखकर चलती बनी। चार रोटियाँ और कटोरे में थोड़ी–सी सब्जी थाली के साथ। पानी पीने के लिए ग्लास तक नहीं। चुपचाप मन मारकर खाकर पुनः सो गये। विगत कई दिनों से ठीक से नींद आने के कारण वे पुनः निद्रा की गोद में चले गए और लगे खर्राटे भरने।

इस बीच माँ–बेटी बहुत देर रात धीरे–धीरे योजना बनाती रही, सविता के दोनों बच्चे भी सो चुके थे। इसलिए और किसी की आहट नहीं हो रही थी। इसी बीच योजना यह बनी कि श्यामसुन्दर को बुलाकर त्रिभुवन बाबू को खूब डाँट पिलायी जाय। इसलिए सविता ने श्यामसुन्दर को फोन पर कहा – ''हैलो ! पापा घर लौट आए हैं। कल आप आ जाइए। और, दूसरे ही दिन श्याम सुन्दर दोपहर के पूर्व आ धमका। तब तक नित्य क्रिया से निवृत होकर होटल से नाश्ता–पानी करके घर आ गये और समाचार पत्र में मन उलझाकर चुपचाप तमाशा देखने लगे कि माँ–बेटी अब किस तरह का व्यवहार करती है।

पर दिन चढ़ते ही छोटे दामाद को आते देख समझ गए कि जरुर इन तीनों की कुछ अज्ञात योजना है। वे चुपचाप रहे और कुछ नहीं बोले। मन का शूनापन ज्यों का त्यों बना रहा। दोपहर को रात जैसा ही सविता टेबुल पर एक थाल में चावल दाल सब्जी और एक लोटा पानी छोड़कर चली गई। उन्होंने भी पूर्ववत् अपना व्यवहार रखा। किसी से कुछ नहीं कहा। अन्ततः भोजनोपरान्त श्याम सुन्दर कमरे में आया और पूछा – ''पापा ! आप इतने दिनों तक माँ को छोड़कर कहाँ चले गए थे ? माँ से विवाद कर क्या इस तरह चुपके से निकल जाना चाहिए था ? आपको कई दिन तक फोन पर बात करना चाहा, पर हर बार आपका स्वीच ऑफ ही मिला। अभी तक उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया था और न ही खुले मन से दामाद से कोई बात करना चाह रहे थे। दिल में जब चोट मनुष्य को पहुँच जाता है तो अपना भी पराया लगले लगता है। जब से आलमीरा खोलकर श्याम सुन्दर और सविता ने उनके गोपनीय दस्तावेज देख लिया था, तब से वे बड़े आहत थे और बेटी–दामाद के प्रति कोई सहानुभूति नहीं रह गई थी। अभी दोनों बच्चों का ध्यान आपसी खेल में

उलझा हुआ था और वे भी नानाजी से दूरी बनाये हुए थे। बच्चे भी बड़े मनोवैज्ञानिक होते हैं। उन्हें भी परिस्थिति मांजते देर नहीं लगी थी। सविता ने दोनों बच्चों कह दिया था – ''नानाजी बड़े झगड़ालू हो गए हैं। वे नानी से झगड़ा करके कहीं चले गये हैं। आयेंगे तो उनसे बात नहीं करनी है। बच्चे मम्मी की बात को गाँठ में बाँध लिये थे। यह भी समझते त्रिभुवन बाबू को देर नहीं लगी थी।

अभी श्याम सुन्दर ने बात शुरु ही की थी भूखी कुतिया की तरह दोनों माँ–बेटी एक साथ टूट पड़ी। केवल शिकवा–गिला ही नहीं, दुत्कार और कटु–वचनों के एक साथ जो वाण चलाने लगे तो बन्द होने का नाम नहीं ले। त्रिभुवन बाबू अबोध बालक की तरह तीनों के कर्ण कटु वचन सुनते रहे। उन्होंने कोई उत्तर देना उचित नहीं समझा। क्योंकि वो जानते थे कि इस ढलती उम्र में अधिक क्रोध करना उन्हीं के लिए भारी पड़ेगा। अस्तु 'मौन स्वीकार लक्षणम्' का स्वांग रचकर आँखे बन्द कर पलंग पर पड़े। अन्ततः तीनों थक हार कर अपना क्रोध उतारकर अपने–अपने कमरे में चले गए। गरजने वाले बादल शान्त हो चुके थे और धरती प्यासी की प्यासी रह गई थी। कुछ ही देर में बादल छँट गए और वही तीखी धूप निकल आयी थी। तत्काल समय की यही माँग थी। उधर माँ–बेटी रात भर कानाफूशी करती रही और इधर त्रिभुवन बाबू मन ही मन योजना बनाते रहे।

दूसरे दिन अचानक अनचाहे एक नई राह निकल गई। उनके एक साले की बेटी थी जो पाँच बच्चों की माँ थी और एक वर्ष पूर्व ही विधवा हुई थी। अभी उसके बच्चे बालिग न तो हुए थे और न ही आय का कोई अच्छा स्रोत उस गरीबन के पास था। आवासीय शहर में वह फूटपाथ पर सब्जी की दुकान लगाती थी और उसकी आय उसके जीवन का स्रोत थी। उसके माता–पिता कई वर्ष पूर्व ही गुजर चुके थे। इसी की स्थिति जैसी मायके वालों को थी। अतः भाई–भतीजों से कुछ भी आशा नहीं थी। उसका नाम निर्मला था। बच्चों के भरोसे घर–द्वार छोड़कर वह फूआ–फूफा के पास कुछ आर्थिक लाभ पाने की उम्मीद लिये वह आयी थी। अचानक उसका आना तीनों जनों के लिए अप्रत्याशित था। जैसे ही वह प्रवेश की, घर में निस्तब्धता मिली। न फूआ के मन में उत्साह दिखा और न ही फूफा में। फूफेरी बहन और बहनोई के मन में भी कोई प्रसन्नता नहीं दीखी। वह समझ नहीं सकी कि आखिर माजरा क्या है। कोई किसी से कुछ बोल नहीं रहा था। वह चूपचाप फूआ को जाकर प्रणाम की और बगल में जा बैठी। अन्ततः सोनमती देवी ने मौन व्रत भंग किया। हल्की आवाज में कुशल श्रेम पूछी और फिर उठकर एक प्लेट में सूखा नाश्ता और एक ग्लास पानी लाकर दी। अभी फूफा से उसकी कोई बातचीत नहीं हुई थी। उसे देखकर वे नहाने चले गए। बाथरुप में जब उन्हें अपना कपड़ा स्वयं धोते देखा तो उससे रहा नहीं गया। वह उठकर बाथरुम गई और बोली – ''फूफा छोड़ दीजिए, मैं ही आपके कपड़े धो देती हूँ। आप नहाकर चले जाइए।'

त्रिभुवन बाबू – ''तुम कब तक मेरे कपड़े साफ करोगी। मुझे तो रोज अपना काम करने की आदत बन गई है। इसलिए रहने दो। तुम कुछ रोज के लिए आयी हो तो अपना आतिथ्य निभाओ।''

पर निर्मला नहीं मानी। त्रिभुवन बाबू के हाथ से कपड़े छीन कर स्वयं धोकर धूप में पसार दी। उसे माजरा समझते देर नहीं लगी। यदा–कदा उसे उड़ती खबर मिलती रहती थी कि उसकी फूआ और फूफा में पटता नहीं है। जो भी हो, दोपहर के भोजन के बाद जब त्रिभुवन बाबू कुछ देर के लिए सुस्ताने लेट गए तो निर्मला उन्हें तेल लगाने चली गई। त्रिभुवन बाबू न–न करते रहे पर आत्मजा की तरह पूरे देह को मल–मलकर तेल लगा ही दी। आज उन्हें जीवन में पहली बार किसी मनुष्य से सेवा मिला था और शरीर को मिली थी नई ताजगी। इसके बाद उन्होंने उसका हाल–समाचार पूछा और आने का कारण जानना चाहा। निर्मला खुले मन से मन की बात बताते हुए अपना

दुखड़ा और परिस्थिति सुनायी। फिर कुछ आर्थिक सहायता की याचना की। इस पर त्रिभुवन बाबू सिर्फ इतना ही बोल पाए कि देखता हूँ, कुछ पैसे होंगे तो काम चला दूँगा। सोनमती देवी छुपकर कान लगाकर सुन रही थी। निर्मला उन्हें देख नहीं पायी। फिर उसने फूफा से पूछा – ''फूआ को कुछ हो गया है क्या ? देखती हूँ वह मुँह लटकाए है, कुछ बोलती नहीं है। दोनों में झगड़ा हुआ है क्या ?'' उस बेचारी को क्या पता कि फूफा का हाल माँ–बेटी और दामाद ने बकरे जैसा रखा है जिसका जिभे करने के लिए तीनों जन छुरी लिए तैयार हैं।''

त्रिभुवन बाबू ने सिर्फ इतना ही कहा कि फूआ से ही पूछो कि वह क्यों मुँह लटकाये रहती है। इतना सुनना था कि दावानल पुनः भड़क गया। ऊँची आवाज में जो बेवाक बोलना शुरु की तो चुप रहना ही न जाने। अन्ततः महारानी जी ने अपना निर्णय सुना दिया – ''मैं आज ही बेटी–दामाद के यहाँ चली जाती, पर तेरे आ जाने से रुक गई। मैं निश्चयपूर्वक कहती हूँ कि अब और इस घर में मैं नहीं रहूँगी। इस मर्द ने मुझे भिखारिन बनाकर रखा है। मुझे भीख माँगकर ही क्यों जीना पड़े पर इस बूढ़े के पास और निभानेवाली नहीं। ये घर–द्वार जिम्मा लगा लें। मैं देखती हूँ कि इसके बिना मैं रह पाती हूँ या नहीं। चारों बेटे–बहुओं ने घर छोड़ दिये और अब मैं भी त्याग रही हूँ।''

अब त्रिभुवन बाबू ने अपना मौन तोड़ा। फिर बोले – ''अगर तेरी यही इच्छा है तो तुम जा सकती हो। अब तक तुझे मैंने देवी जैसा जो इज्जत के साथ रखा, यही गलती की। मेरा घर लौटकर आना ही भयंकर भूल रही। अगर तुम्हें भीख माँगने की ही इच्छा है तो भगवान ने चाहा तो वह भी पूरी हो जाएगी। उसके दरबार में देर है, अंधेर नहीं। तुम जो भी लेना चाहो, लेकर जा सकती हो, पर नगद एक पैसे मिलने वाला नहीं है। इसके बाद उन्होंने सेवा निवृति के बाद सारी कहानी संक्षेप में निर्मला को सुना दी। सुनकर निर्मला को काठ मार गया। कैसी मूढ मेरी फूआ है ? इतना–इतना हिस्सा बाँटने के बावजूद इसकी प्यास नहीं मिट रही है। इसका अर्थ है कि यह सब खेल सविता और उसके पति का है जो इस घर और फूफा की जिन्दगी से खेल रहे हैं। वह मन ही मन तर्क–वितर्क कर ही रही थी कि बीच में श्याम सुन्दर आ टपका। उसने भी लकीर खींचते हुए कहा – ''ठीक है पापाजी। अगर माँ मेरे पास जाना चाहती तो सहर्ष मैं इन्हें कल ले जाऊँगा। पर जाने के पहले आप यह सिर्फ मकान ही उनके नाम से एक सादे पेपर में ही सही लिख दीजिए कि आज के बाद आप इस मकान का मालिकाना हक यहाँ तक बेचने का भी अधिकार माँ को दे रहे हैं ? फिर मैं देखूँगा कि माँ को सुख मिलता है या दुःख। पर यह तो बताइए कि आप किसके दरवाजे पर जाकर शरण लेंगे।

जिद्द दोनों तरफ से ठन गई। कोई झुकने को तैयार नहीं थे न ही सोनमती देवी और न ही त्रिभुवन बाबू। अब घर सूखी डारा पर चिड़िया का बसेरा बनकर रह गया था। इन्तजार था कि कब डाल टूटे और बसेरा उजड़ जाय। रात को अब चारों की पुनः पंचायत बैठी जिसमें कोई पंच नहीं था। जब निर्मला से नहीं रहा गया तो अन्ततः उसने पूछ बैठा – ''तब फूफा, इस बुढ़ापे में आप कहाँ जायेंगे।'' इस पर त्रिभुवन बाबू ने साफ–साफ कह दिया – ''दुनिया बहुत लम्बी–चौड़ी है। कहीं तो शरण मिल ही जाएगी। नहीं कही तो वृद्धाश्रम या धर्म स्थान तो है न। और नहीं तो रेलवे स्टेशन पर शरण ले लूँगा। लो मैं एक सादे कागज पर हैण्ड नोट बनाकर रख दिया हूँ। दो पन्ने में है। दोनों में तुम तीनों हस्ताक्षर कर दो और निर्मला ! तुम इसमें गवाह बन जाओ ताकि कोई न कहे कि मैं इसके साथ कोई छल कर रहा हूँ। इसके बाद जो कुछ हुआ उसे आप अगले भाग में देखेंगे।

क्रमशः जारी ....
अब और अगले भाग में।

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ़

बरनवाल सेवा सदन न्यास, धनबाद

बरनवाल सेवा सदन, धनबाद के निर्माणार्थ सहयोग करें। सहयोग करने वाले का नाम बरन संकल्प में प्रकाशित किया जायेगा।

1. 10000/– या ऊपर का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम।

2. एक लाख रुपये का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम के साथ–साथ हॉल में तैलिय चित्र।

3. दो लाख पचास हजार रुपये का सहयोग देने वालों के नाम पर एक वातानुकूलित कमरा, हॉल में तैलिय चित्र व शीलापट्ट पर नाम।

4. दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक का सहयोग देने वाले समाज के भामाशाहों का नाम शीलापट्ट पर वरीयता क्रम से दी जायेगी।

सेवा सदन भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, समाज के सभी सम्मानित सदस्यों से सहयोग की अपील है। आप हमें सीधे हमारे एकाउंट में भी राशि जमा कर सहयोग कर सकते हैं। हमारा एकाउंट विवरण निम्नवत है–

बरनवाल सेवा सदन न्यास

बैंक : यूको बैंक, हीरापुर ब्रांच धनबाद

खाता सं. : 01910100935484

IFSC Code : UCBA0000191

इस संदर्भ में आप निम्नवत लोगों से भी संपर्क कर सकते हैं।

पी.एल. बरनवाल	**बालेश्वर प्रसाद**
अध्यक्ष	सचिव
मो. : 9431187661	मो. : 9431725382
7004188137	7717762093

बरनवाल समाज OBC में शामिल हो

बिहार प्रदेश बरनवाल राजनीतिक प्रतिनिधि सम्मेलन में सरकार से बरनवाल समुदाय को "OBC" में शामिल करने की माँग की गई। कहा गया कि यह समाज किसी दल विशेष का पिछल्लगू नहीं रहेगा और राजनीतिक हिस्सेदारी नहीं देने पर चुनाव में ''नोटा'' का प्रयोग करेगा।

बापु सभागार में रविवार 20 अक्टूबर को हुए सम्मेलन में वक्ताओं ने दावा किया कि बिहार में उनके समुदाय की आबादी 5% है। कई जिलों में यह आबादी 12% तक है। इस हिसाब से गया, नवादा, जमुई और पटना सहित 6 लोकसभा सीटों पर समाज के प्रतिनिधित्व का दारवा बनता है। सत्तारुढ़ जदयू के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद वशिष्ठ नारायण सिंह ने कहा कि राज्य सरकार सभी समुदाओं के विकास के लिए संकल्पित है। बरनवाल समेत पुरे वैश्य समाज को सहायता दी गई। पूर्व मंत्री अशोक चौधरी ने विचार रखें।

एक व्यक्ति साइकिल पर अपने बच्चे को लिये जा रहा था, बच्चा जोर–जोर से रो रहा था। रास्ते में एक आदमी ने पूछा – क्यों भाई, बच्चा इतना रो रहा है और तुम चले जा रहे हो ?

साइकिल सवार ने कहा – यह रो नहीं रहा, रुलाया जा रहा है, क्योंकि साइकिल में घंटी नहीं है।

....

एक मरीज को डॉक्टर ने नमक खाने से मना किया, कहा कि इससे तुम्हारी जान जा सकती है। फिर भी मरीज मर गया, जानते है क्यों ? क्योंकि उसके टूथपेस्ट में नमक था।

उठो, जागो ! # संघे शक्ति कलियुगे **संघर्ष करो !!**

आजादी के 72 वर्ष बीत चुके हैं। हमारा देश 21वीं सदी में प्रवेश कर चुका है। कम्प्यूटर से लेकर इंटरनेट तक दुनिया विज्ञान के युग में प्रवेश कर चुकी है। पर हमारा बरनवाल समाज आज भी जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ है। हम सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से काफी पीछे हैं। बरनवाल समाज के लोग बिहार में काफी संख्या में निवास करते हैं।

आज सभी समाज सत्ता में अपनी–अपनी भागीदारी ली हुई है, लेकिन संसद तो दूर सत्ता के छोटे से केन्द्र विधानसभा, विधान परिषद, बोर्ड,निगम इत्यादि में हमारी आवाज जोरदार ढंग से उठाने वाला, हमारे सुख–दु:ख को बताने वाला एक भी प्रतिनिधि किसी भी क्षेत्र में हमारा प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में हमारा प्रतिनिधित्व शून्य है।

अब समय आ गया है। 2019 में लोकसभा तथा 2020 में विधान सभा का चुनाव होने वाला है। भीख माँगने से हमें अपना अधिकार नहीं मिलेगा। राजनीति के क्षेत्र में हमें भागीदारी चाहिए। अब ये उपेक्षा, ये एकान्तवास हम और बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमें अपने समाज के प्रतिनिधियों को सरकार, सत्ता, समाज एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों में आगे लाना हैं।

आज पूरे बिहार में बरनवाल की संख्या 5% प्रतिशत यानि लाखों में है और हमें अपना हक लेने के लिए आगे आना होगा। जो राजनीतिक पार्टियाँ हमारे समाज के प्रतिनिधि को टिकट देगा, हमारा समाज भी उसी पार्टी को मान्यता देगा। अपनी एकता और सक्रियता सदैव बनाएँ रखें। बरनवाल महासभा ने समाज में राजनीतिक जागरुकता लाने का कार्य किया है। समाज में जागृति एवं एकता लाने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन समय–समय पर होते रहना चाहिए।

यद्यपि परोक्ष में हम देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं, परन्तु प्रत्यक्ष में हम राजनीति में कोई स्थान नहीं बना सके है। आज का युग राजनीति का युग हो गया है। राजनीति के गुरुत्वाकर्षण पर हमारा अस्तित्व टिक गया है। राजनीति के क्षेत्र में भागीदारी प्राप्त करने के लिए समाज के कर्णधारों तथा युवा वर्ग को शक्ति और साहस प्राप्त होने की कामना ईश्वर से करता हूँ।

बन्धुओं, अपने को जागृत करना अच्छा है, दूसरों को करना श्रेष्ठ है, परन्तु अपने साथ पूरे समाज को जागृत करने का प्रयास करना श्रेष्ठतम कार्य है।

अधिकार कोई भीख नहीं, जो माँगने से मिल जाता है, बल्कि इसको अपनी एकता और शक्ति द्वारा हासिल करना पड़ता है। इसलिए मैं सभी बरनवाल बन्धुओं से निवेदन करता हूँ कि वे आपसी गुटबाजी एवं निहित स्वार्थ से उपर उठकर अपनी एकता व शक्ति से बरनवाल राजनीतिक महासम्मेलन को सफल बनाये, ताकि हम इस महासम्मेलन के उद्देश्य को सार्थक कर सकें एवं बरनवाल समाज को गौरव प्रदान कर सकें।

मित्रों ! युग बदल रहा है, और आपके लिए भी सामाजिक/राजनीतिक परिवेश बदलने की भूमिका दिखाने का अवसर है। समाज के विकास में युवाओं की सबसे बड़ी भूमिका होती है। महिलाएँ और लड़कियाँ खुद को कम नहीं आँके। समाज के निर्माण में खुलकर आगे आएँ और अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ।

आपने यह महसूस किया है कि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। इसलिए इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में आपसे निम्नलिखित बिन्दुओं पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देने के लिए विनम्र निवेदन कर रहा हूँ कि –

1. बिहार की कुल जनसंख्या का 5% आबादी आपकी है और आप अगर जागरुक है, तो विधान सभा में दस विधायक अपने बलबूते पर भेज सकते हैं।

2. इस गणतांत्रिक व्यवस्था में आपका आपसी फूट एवं वैमनस्य आपको आगे बढ़ाने से रोकता है। कृपया इसे दूर कर अपनी एकता और शक्ति को मजबूत करें।

3. आप स्वयं ही अपना सबसे बड़ा दुश्मन है, क्योंकि जब कोई अन्य अपने स्वार्थ में आपस में आपको लड़ाना चाहते हैं, तो आप ईर्ष्या, वैमनस्य एवं व्यक्तिगत स्वार्थ में
तत्क्षण लड़ने के लिए कमर कस लेते हैं।

4. दबाव बनाने में आप सर्वदा सभी समुदायों में सर्वश्रेष्ठ है। चुनाव जीतने के लिए यही गुण तो सबसे बड़ा अस्त्र है।

5. अतीत में आप सदियों तक शासक रहे हैं एवं कालान्तर में षड्यंत्र का शिकार होकर आज पिछड़े की श्रेणी में आते है।

6. आप यौद्धेयगण महाराजा अहिबरन जी के संतान हैं। उनका क्रांतिकारी खून आपकी रगो में दौड़ रहा है।

7. आप धन–दौलत, विद्या, क्षमता एवं विलक्षण बुद्धिमता के क्षेत्र में किसी अन्य जातीय समुदाय से कतई कम नहीं है।

8. आपने मन बनाया, तो आपके समाज में आज डॉक्टरों, इंजीनियरों की कमी नहीं है। ठीक वैसे ही अगर आप पूरी निष्ठा से संकल्प ले लें, तो अपने समाज में विधायक, सांसद एवं मंत्री की कमी बिल्कुल नहीं रहेगी।

उपरोक्त बिन्दुओं पर आपका ध्यान मैं इसलिए आकृष्ट कर रहा हूँ, क्योंकि आपको भी हनुमान जैसा अपनी क्षमता का आभास नहीं है।

बिहार के गौरवशाली राजधानी पटना में दिनांक 20 जनवरी, 2019 को आयोजित बरनवाल राजनीतिक प्रतिनिधि महासम्मेलन में आपको अपना परिवेश बदलने के लिए आमंत्रित किया गया है ताकि आप सभी बरनवाल बन्धु आपसी द्वेष को भूलकर एकता के सूत्र में बँधकर जागरुक और सक्रिय बनकर आगे आएँ और अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए संगठित होकर अपने समाज को शक्तिशाली बनाएँ, तभी हमारे समाज का भाग्योदय संभव है।

समय की बहती धारा में, जिन्दगी बह जाएगी।
दोस्तों ऐसा कार्य करना, जो दास्ताँ रह जाएगी।।

समस्त बरनवाल बन्धुओं को नववर्ष 2019 की हार्दिक शुभकामनाएँ ! नववर्ष आप सब के जीवन में नई खुशियाँ लाएँ।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ –

डॉ. रंजीत कुमार
मंत्री – श्री भा.ब.वै. महासभा, बिहार प्रदेश
उपाध्यक्ष – बरनवाल महासभा, पटना महानगर
सचिव – बरनवाल भवन न्यास, पटना

''तृतीय धाम–बद्रीनाथ''

हिमालय की सुरम्य वादियां, बर्फ से अच्छादित उतुंग शिखर, 24 मई की शाम घाटी में एक छोटे से टीले पर बैठे हुए हम क्षितिज की ओर टकटकी लगाए देख रहे थे। दूर पर्वत पर चीड़ व देवदार के वृक्ष हवा से झूम रहे थे, सूर्य भी अपनी किरणें समेटने को था, पक्षियों का एक झुण्ड उड़ता हुआ आया और मेरे ऊपर से दूर वादियों में ओझल हो गया। हवा की शीतलता गहराने लगी। नीचे अलकनन्दा के पानी को ढलते हुए सूरज की किरणें चमका रही थीं, लग रहा था मानों किसी ने मुंह पर दर्पण लगा दिया हो, हवा तेज हो चली, उतीस व मेव के वृक्ष की डालियां हिलने से पानी भी झिल–मिला रहा था, पीठ पीछे चीड़ के पेड़ों की पत्तियां हवा से सरसरा रही थी, पेड़ों के झुरमुटों के बीच पक्षियों की चहचहाहट बता रही थी कि गेस्ट रुम में वापस चलो, शाम अपने अन्तिम पड़ाव पर है, वर्षा होने वाली है।

'हम बात कर रहे हैं दुर्गम मार्ग बद्रीनाथ की जो भारत का तृतीय धाम बैकुण्ठ लोक कहलाता है जहाँ अधिकांश हिन्दू जय बद्री विशाल के दर्शन करने जाते हैं।

20 मई 2018 दिवस रविवार को अपराहन तीन बजे हम निज आवास से नीरु के साथ शाहजहाँपुर के लिए निकले। हमें वहाँ से साढ़े नौ बजे दूर एक्सप्रेस से हरिद्वार जाना था। धीरे–धीरे करके ट्रेन तीन घंटे विलम्ब से स्टेशन पर आई, कोच में हमने बिस्तर लगाया और शयन की व्यवस्था की। ट्रेन लेट होने के कारण हम हरिद्वार देर से पहुँचे और रेलवे स्टेशन रोड के होटल गुलमर्ग में ठहरे। वहाँ के ट्रेवलिंग एजेन्ट से सम्पर्क करने पर पता चला कि बाइस की बद्रीनाथ की सभी सेवाएं फुल हैं, हमें हरिद्वार में ही स्टे करना पड़ेगा।

हरिद्वार हमने दो बार देखा है परन्तु होटल में रहने के बजाय पुनः हरिद्वार देखने निकले। कुछ समय गंगा के किनारों का सैर करने के पश्चात साधू वेला के लिए आटो लिया और शिव मन्दिर, वैष्णों देवी मन्दिर, कृष्ण मन्दिर, भारत माता का मन्दिर, पथिक आश्रम, जयराम आश्रम, गौशाला, भूमा निकेतन, पावन धाम, हरिहर आश्रम एवं दक्ष प्रजापति महादेव मन्दिर के दर्शन किए। शाम को हरि की पौड़ी पर गंगा आरती में भाग लिया। चारों धाम यात्रा के कारण तीर्थयात्रियों की अपार भीड़ थी फिर भी गंगा आरती महोत्सव सजीव लगा।

वहाँ से लौटकर होटल के पास स्थित कान्हा टूर एण्ड ट्रेवेल्स से 23 मई की मार्निंग के लिए बद्रीनाथ की सीट बुक करवाई और भोजन कर निद्रा देवी की गोद में आ गिरे। दर्शन करने में भी थकान का अनुभव हो रहा था।

22 मई का पूरा दिन हमारे साथ था, नीरु से विचार–विमर्श कर ऋषिकेश भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। ऋषिकेश में प्रथम लक्ष्मण झूला पर गये, वहीं पर चौदह मंजिल ऊँचा भव्य मंदिर है जिसमें सभी देवी–देवताओं को स्थान दिया गया है, आदि बद्रीनाथ टैम्पुल, सच्चा अखिलेश्वर चौबीस अवतार विष्णु भगवान, रामझूला, स्वर्ग आश्रम, गीता भवन, वेद निकेतन, काली कमली वाला आश्रम, नीलकंठ महादेव, मनसा देवी, चण्डी देवी यह ऊँचे पर्वत पर है जहां रोप–वे से भी जाया जाता है। सभी स्थानों का भली प्रकार दर्शन किया। गंगा के किनारे सुन्दर घाट बने है, गंगा के किनारे ही परमार्थ निकेतन है, स्वामी चिन्मयानन्द के संरक्षण में यहाँ गतिविधियां सराहनीय है।

ऋषिकेश से पुनः हरिद्वार आ गये। बस स्टेशन से योग गुरु स्वामी रामदेव का आश्रम ''पतंजलि योग पीठ संस्थान' देखने के लिए कलियार मोड़ तक बसका सहारा लिया। यह हरिद्वार–रुड़की राष्ट्रीय राजमार्ग पर है, बस जिस जगह रुकी, ठीक उसके सामने स्वामी जी का पतंजलि औषधीय उद्यान है, पतंजलि हर्बल गार्डेन को देखने की इच्छा से वहां गये। इसमें प्रवेश डिजिटल कार्ड द्वारा होता है यहां प्रति व्यक्ति 50 रुपये का कूपन लेना पड़ा। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया है, उन्होंने एक चन्दन का पौधा भी रोपा है। इस औषधि उद्यान में राशि वाटिका, नक्षत्रवाटिका, नवग्रह वाटिका, ज्ञान गुहा पुष्कर सरोवर जलप्रपात, वशिष्ठ

गुफा, वृक्ष निलयम, पक्षी विहार, संजीवनी गुहा, किचन गार्डेन एवं पौधशाला है। आस–पास प्राकृतिक छटा बिखरी हुई है, इसमें हर्बल औषधियों पर रिसर्च किए जाते हैं।

वहाँ से थोड़ा पैदल वापस आकर पतंजलि योग पीठ 1 देखा। स्वामी रामदेव के प्रभाव से यहाँ एक ग्राम बस गया है – महर्षि दयानन्द ग्राम। योग गुरु का अपना बड़ा विस्तृत साम्राज्य है, इसमें पतंजलि आयुर्वेदिक चिकित्सालय, आयुर्वेद महाविद्यालय, विश्व विद्यालय, भव्य शॉप शो रुम में व्यक्ति अपनी आवश्यक वस्तुएं क्रय करता है, हमने भी कई चीजें खरीदी, नीरु को एक पुस्तक अच्छी लगी ''औषधि दर्शन'' हमने उसे भी खरीद लिया, अन्नपूर्णा कैन्टीन में भोजन ग्रहण किया।

योग पीठ 1 से कुछ दूरी पर पतंजलि योग पीठ 2 का भी निर्माण किया गया है, यह 1 से काफी विशाल एवं आधुनिक है। आधुनिकता देखकर आश्चर्य होता है कि इतने बड़े साम्राज्य की स्थापना कैसे हो पायी। इसमें योग चिकित्सा, अनुसंधान केन्द्र, प्रसादम कैंटीन, भारत स्वाभिमान मुख्यालय, बानप्रस्थ आश्रम, महर्षि बाल्मीकि आश्रम, संतरविदास लंगर, आचार्य कुलम, आवासीय शिक्षण संस्थान, गुरुकुल गौशाला फार्म, आदि संस्थानों का निर्माण है।

कनखल में कृपालु बाग आश्रम औद्योगिक क्षेत्र हरिद्वार में दिव्य फार्मेसी सिडकुल में योग ग्राम बनाये गये है। पतंजलि बस स्टैण्ड से वापस हरिद्वार होटल आ गये।

23 मई बुधवार प्रातः 5 बजे हम बद्रीनाथ धाम के लिए प्रस्थान किए। हल्की बदली का रुख था, ठंडी हवा बह रही थी। 24 किमी. की यात्रा कर हम ऋषिकेश मोड़ पर पहुँचे, इसी रास्ते में आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा बसाया गया शांतिकुंज, गायत्री शक्तिपीठ, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, योगग्राम, ध्यानकेन्द्र आदि भी देखा। वहाँ से देव प्रयाग यहां पर अलकनन्दा एवं भागीरथी का संगम है, यहीं पर रघुनाथ जी की श्यामवर्षा में विशाल मूर्ति दर्शनीय है। आगे श्रीनगर रुद्रप्रयाग यहां पर अलकनन्दा मन्दाकिनी का संगम है, गोचर कर्ण प्रयाग यहां पिन्डर नदी अलकनन्दा में मिलती है। नन्द प्रयाग चमोली, पीपल कोठी, गरुण गंगा, टंगनी, हेलन जोशी मठ, विष्णु प्रयाग यहां धौली अलकनन्दा में मिलती है। गोबिन्द घाट यहां से ही फूलों की घाटी एवं हेमकुण्ड गुरुद्वारा के लिए अलग मार्ग निकाला गया है। अलकनन्दा पर एक सुन्दर लौह पुल बना है, वहां से घाघरिया पैदल चलना पड़ता है, घाघरिया से एक पैदल मार्ग फूलों की घाटी एवं दूसरा पैदल मार्ग हेमकुण्ड साहेब जाता है।

हेमकुण्ड गुरुद्वारा होने के कारण सिक्ख परिवार बस, कार, बाइक पैदल यात्रा करते दिखे जिनके लिए जगह–जगह लंगर चल रहे थे। औरंगाबाद महाराष्ट्र के बिनायक बरडे अपने परिवार के साथ यात्रा कर रहे थे। लंच के समय उनसे काफी बातें की। फूलों की घाटी कई मीलों में फैली है जहां प्रकृति ने स्वतः बहुत रंग बिखेरे हैं।

गोविन्द घाट से पाण्डकेश्वर, हनुमान चट्टी, देवदर्शनी होते हुए शाम के 6 बजे बद्रीनाथ धाम पहुँचे। हल्की बूंदा–बांदी हो रही थी, रास्ते में घाटियां बहुत सुन्दर लगी, कहीं–कहीं ऊँची पहाड़ी होने के कारण सूर्य के दर्शन नहीं होते थे, वह दूर वादियों में छिप–छिप जाता है। समुद्र तल से 3140 मी. की ऊँचाई स्थित यह धाम बैकुण्ठ लोक कहलाता है। वहां हम गढ़वाल मण्डल द्वारा निर्मित गेस्ट हाउस में ठहरे। रात्रि 8 बजे जब हम मन्दिर कैम्पस में पहुँचे तो दर्शनार्थियों की लम्बी लाइन लगी थी, थकान के कारण सुबह दर्शन करने का विचार बनाया।

बद्रीनाथ धाम हिमालय के हिमाच्छादित पर्वत मालाओं के मध्य स्थित हैं। अलकनन्दा नदी के दाहिने तट पर बद्रीनाथ पुर बसी है। उसी के मध्य मन्दिर बना है, मन्दिर के सामने के विशाल पर्वत को नर पर्वत एवं मन्दिर कैम्पस के पर्वत को नारायण पर्वत कहते हैं। मन्दिर के सामने अलकनन्दा के किनारे नारद शिला, नरसिंह शिला, बारह शिला, गरुड़ शिला एवं मार्कन्डेय शिला है। यहीं पर ब्रम्ह कपाल है जहां पितरों को पिण्ड दान देकर तर्पण करते हैं।

एक अच्छी सुविधा है, शीत स्थल में गर्म जल की व्यवस्था, मन्दिर के नीचे नदी के पास तप्त कुण्ड है, जिसका पानी गर्म है। इन तप्त कुण्डों को ब्रम्हकुण्ड,

सूर्यकुण्ड, नारदर कुण्ड एवं गौरी कुण्ड का नाम दिया गया है।

प्रातः 8 बजे तैयार होकर जब हम दर्शन के लिए पहुँचे तो हमसे पूर्व ही दर्शनार्थियों की लम्बी लाइन लगी थी, पीछे हम भी लाइन में लग गये। काफी समय तक जब लाइन आगे नहीं बढ़ी तो आगन्तुक एक दर्शनार्थी ने बताया कि रिलायन्स इण्डस्ट्रीज के मालिक मुकेश भाई अंबानी अपने परिवार के साथ दर्शन के लिए आ रहे हैं, इसलिए विशेष पूजा की व्यवस्था की जा रही है, थोड़ी देर में एक हेलीकॉप्टर उड़ता हुआ दिखाई दिया, उनकी पूजा में हम सभी डेढ़ घंटे लाइन में जहां के तहाँ खड़े रहे। जब अम्बानी की पूजा खत्म हुई तब मन्दिर आम दर्शकों के लिए खुला। पुनः धीरे–धीरे लाइन में चलकर उतनी ही देर पश्चात हमने बद्री विशाल के दर्शन पाये। इस प्रकार तीन घंटे हम दर्शन में लगे रहे।

इस सुन्दर एवं भव्य मन्दिर का निर्माण गढ़वाल नरेश ने करवाया है, मूर्ति के ऊपर सुवर्ण का छत्र महारानी अहिल्या बाई होल्कर का चढ़ाया है, मन्दिर में बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण एवं मुकुट धारण किए हुए श्री बद्री विशाल जी श्यामल स्वरुप में सुशोभित है, ललाट पर हीरा दमक रहा है, दाहिनी ओर कुबेर और गणेश एवं बाई ओर लक्ष्मी और नारायण हैं।

यहां से तीन किमी. की दूरी पर मनिभद्र पुर है, यहाँ गणेश गुफा है, व्यास गुफा है जहां पाराशर व्यास ने तपस्या की थी, यहीं पर अलकनन्दा सरस्वती का संगम है जो केशव प्रयाग कहलाता है। व्यास गुफा से जब हम ऊपर की ओर देखते हैं पास–पास पर्वत की तीन चोटियां दिखाई देती है, इनका नाम ब्रम्हा, विष्णु एवं महेश हैं।

हमने माणा (माना) गांव भी देखा जो भारत का अंतिम गांव है। यहां से तिब्बत के लिए व्यापार होता था। वहां इनकी मण्डी श्रीलिंग एंव रापुरा है। यहां से आगे मानाधुरा है, धोर्लिग मठ एवं मानसरोवर का रास्ता था जो अब बन्द कर दिया गया है। यहीं पर राजा मुचकुन्द की भी गुफा है। माना गांव की चाय बहुत स्वादिष्ट एवं महंगी है। यही से आगे 5 किमी. पर वधुधारा, शेषनेव, चरण पदुका और सान्तोपन्थ है जहां जा नहीं सके।

इस प्रकार दिन भर घूम–घूम कर,चल–चलाकर, ठहर–ठहर कर वहां के सभी दर्शनीय स्थलों को देखा, रात्रि में पुनः बद्री विशाल के दर्शन कर गेस्ट रुम आ गये। 25 मई को प्रातः हरिद्वार के लिए निकलना है।

प्रातः दैनिक कृत्यों से निवृत्त हो, साथ के यात्रियों से विदाई लेकर स्टैण्ड पर आ गये, बस पूर्व में लगी थी, हम अपनी सीट पर विराज गये। बद्रीनाथ धाम से पूर्व में बताएगये उसी रास्ते से हम हरिद्वार के लिए वापस निकल पड़े। प्राकृतिक दृष्य सुहावना है, सूर्य, बादल एवं पर्वत की लुका छिपी चल रही है, मई माह में भी कहीं से गरमी का अहसास नहीं हो रहा है, बस निरन्तर चलती रही। नन्द प्रयाग में एक ढाबे पर सभी ने भोजन किया, कहीं–कहीं रास्ते में जाम का सामना करना पड़ा।

रास्ते में राजा जी नेशनल पार्क, चित्रा जल, विफत गृह, नहर की सुन्दर वीथिका एवं फूलों भरे पार्क के मध्य चल कर शाम को हरिद्वार आये और पास ही स्थित होटल कैलास में निवास किया।

26 मई को प्रातः गंगा स्नान कर भ्रमण करते हुए आर्य समाज मन्दिर भी गये। आर्य समाज गंगा के किनारे गूजरवाला भवन के पास स्थित है। 9 बजे देहरादून के लिए प्रस्थान किया और डोडवाला, भानेवाला, रायवाला, लालटपा होते हुए देहरादून पहुँचे। मार्ग में सेब, लीची व चाय के बगान देखे, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. सरिया का कारखाना एवं लवाना माल भी देखा। दून रेलवे स्टेशन के पास गान्धी रोड पर होटल जी.पी. ग्रान्ड में ठहरे।

हमारे साथ पुंवायां, शाहजहाँपुर का भी एक परिवार वहाँ आया, थोड़ा विश्राम कर भोजन किया और देहरादून घूमने का प्लान बनाया। उस परिवार ने भी साथ चलने की इच्छा जताई। होटल प्रबंधक से संपर्क कर एक बड़ी कार मंगवाई और देहरादून शैर को निकले। सर्वप्रथम टकंकेश्वर महादेव मन्दिर पहुँचे, यह एक गुफा के अन्दर बना है। विशाल शिवलिंग पर पर्वत की तलहटी में जल टपका करता है, इसी से इसका नाम टपकेश्वर पड़ा है। यहाँ पर अश्वस्थामा की प्रतिमा ध्यान मुद्रा में बनी है। वहाँ से आगे चलकर सी.एस.ए. सिविल सर्विस एकाडमी

का बाह्य ग्राउण्ड देखा। ए.एच.क्यू. आर्मी हेड क्वार्टर के बाहर बहुत देर तक कार चलती रही। गुच्चू पानी अनारवाला एक पहाड़ी गुफा है जिसमें घुटने भर पानी में चलकर कमर तक पानी में जाने की व्यवस्था है। उसमें घुसने के लिए पच्चीस रुपये का टिकट लेना पड़ा। सर्परुपी जल सुरंग में आगे बढ़ने पर बड़ा मजा आया। यह सुरंग आगे चल कर पहाड़ों में घुस जाती है जहां से झरने के रुप में यहाँ पानी आता है हम सबने यहां पर फोटो खिंचवाए।

वहाँ से चलकर ''फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीच्यूट'' आये। यह पूरे भारत में एफ.आर.आई. के नाम से प्रसिद्ध है। यह भव्य भवन 1906 में अंग्रेजों द्वारा बनवायी गया है। विशाल प्रांगण में स्थित इसमें 6 बड़े ब्लॉक हैं, इसमें भी प्रवेश हेतु 60 रु. का टिकट प्रवेश शुल्क देना पड़ता है।

टिकट बिक्री पटल के पश्चापत सामाजिक वानकी संग्रहालय, वन व्याधिकी संग्रहालय, वनसम्बर्धन संग्रहालय, सूचना केन्द्र प्रकोष्ठ संग्रहालय, अकाष्ठ वन उपज संग्रहालय, वन कीट संग्रहालय यह इन 6 ब्लॉकों में बना व बंटा है। एफ.आर.आई. एक यूनिवरसिटी भी है। इस संस्थान में फारेस्ट्री और इनवेरानमेन्टल साइंस में एम.एस.सी. एवं पी.एच.डी. कराने की व्यवस्था है।

यह भारत का एक मात्र वन अनुसंधान संस्थान है। यहां आकर देहरादून देखने की इच्छा पूरी हो गयी। बड़ा अच्छा लगा, उन वस्तुओं को देखा जो पुस्तकों में भी नहीं पढ़ा था। मार्ग में फन वैली, मृगपार्क, खलंग स्मारक, तपोवन देखते हुए सहस्त्र धारा पर पहुँचे।

सहस्त्र धारा पर्वत से गिरता हुआ नौ मीटर ऊँचा झरना है, इसके ठीक नीचे एक गुफा है, यह पिकनिक स्थल भी है, इसके समीप बादली नदी बहती है, यह झरना गन्धक के पानी का है जिसमें चर्म रोग दूर करने का औषधीय गुण है। ऊपर से गिरता झरना बहुत सुन्दर लगता है इसमें जबलपुर के धुंआधार जलप्रपात की याद ताजा कर दी जिसे हमने भेंडा घाट एवं चौसठ योगिनी मन्दिर के साथ नर्मदा के तट पर देखा था। सहस्त्र धारा में पिकनिक का आनन्द लेते हुए देर शाम हो गयी, यहाँ प्रतिदिन एक छोटा सा मेले जैसे दृश्य रहता है। यहीं पर कई मजेदार चीजें खाई और वापस होटल आ गये।

27 मई को मसूरी घूमने का प्लान बना। पुंवायां परिवार को भी एक दूसरे का साथ अच्छा लगा, वह भी हमारे साथ हो लिए। कभी–कभी ईश्वर कैसा सुखद संयोग बना देता है। देहरादून मसूरी के बीच की दूरी लगभग चालीस किमी. है और पूरा सफर ऊपर चढ़ते हुए चक्करदार पहाड़ी मार्ग ही है।

पर्वतों की रानी मसूरी मनोरम पिकनिक स्थल है, बर्फ से ढका हिमालय यहाँ से भी दिखता है, यहाँ घुड़सवारी व ट्रेकिंग की अच्छी व्यवस्था है, कैसल्स बैंक शहर के शोर शराबे से दूर नव विवाहितों को बहुत लुभाता है। लवर प्वाइंट से वादियों को निरखना आकर्षक है, म्यूनिसिपल गार्डेन में फूलों की अनेक किस्में देखने को

मिली, हरा–भरा स्थल बहुत खूबसूरत है। चीड़ एवं देवदार के विशाल वृक्षों की पंक्तियाँ शिमला का स्मरण कराती हैं इसका भी प्रवेश शुल्क पच्चीस रुपया है, पार्क में एक कृत्रिम झील है इसमें नौकायान की सुविधा हैं।

तुषार म्यूजियम की तरह यहां एक छोटा मोम के पुतलों का म्यूजियम है इसमें एक छोटी सी शॉप एवं रेस्टोरेन्ट हैं, इसकी अलग से एक सौ रुपया इन्ट्री फीस है। हम सबने इसे भी देखा और महान विभूतियों के साथ फोटो भी खिंचवाए। गनहिल यहाँ का दर्शनीय स्थल है, यहाँ रोपवे से आया जाता है, यहाँ तक दूरबीन लगी है जिसमें गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, चौखम्भा, नन्दा देवी का सुन्दर दृश्य दिखता हैं।

धनौल्टी प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर बेहद खूबसुरत पर्यटन स्थल है, अब यहाँ बर्फ बहुत कम समय ही दिखती है। हमारे समय यहाँ से बर्फ गायब थी, लालटिप्प भी एक खुबसूरत पिकनिक स्थल है, साइड शीन, प्रोटेस्ट स्टाप, मालरोड, पिक्चर गैलरी इसमें भी पच्चीस रुपये का प्रवेश शुल्क है। मसूरी लेक भी बहुत सुन्दर लगी, इसमें भी नौकायान की व्यवस्था है। झील के किनारे बैठकर देखने से उसके चारों तरफ की वादियां अपूर्व सुख का आनन्द कराती हैं। यहां पर हम सबने भेलपूरी, पनीर मन्चूरियन एवं पानीपूरी गोल गप्पे खाएं।

कैम्पटी फाल यहाँ का एक और खूबसुरत स्थल है, यह चारों तरफ ऊँची–ऊँची पहाड़ियों से घिरा है, ऊँचे पहाड़ से गिरते झरनों के नीचे स्नान करना बेहद रोमांचक लगता है। यहाँ पर्यटकों की भारी भीड़ है, पर्यटक स्नान करते हुए खूब फोटो खिंचवाते हैं, हमने भी खिंचवाया, फाल में स्नान किया, तैरे–भागे, प्रथम बार दूर से गिरते झरनों के नीचे स्नान का लुफ्त लिया, सभी ने ताजे नाश्ते का आनन्द उठाया।

देहरादून से मसूरी का छोटा सा सफर रोमांच भरा रहा। पहाड़ों की घुमावदार पगडंडी पर धीरे–धीरे उपर की ओर बढ़ते कभी भय होता था तो कभी घाटी का सौन्दर्य देखकर प्रसन्नता होती है। हिमालय में बहुलता से पाये जाने वाले मंसूर पौधों के नाम पर इसका नाम मसूरी पड़ा। अन्त में हमलोगों ने विष्णु पैलेस में रात्रि विश्राम किया।

28 मई को पूर्वाह्न बारह बजे चेक आउट था। पिक्चर गैलरी का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। मसूरी एवं देहरादून देखने की पूर्व इच्छा पूरी हुई। हम देहरादून के लिए वापस लौटे। मार्ग में दून एवं मसूरी की आकर्षक वादियों का अवलोकन करते हुए प्रकाशोत्सव महादेव मन्दिर पहुँचे। मेन रोड पर स्थित यह मन्दिर भी काफी महत्वपूर्ण है। इसकी एक बात अलग लगी, कहीं भी दान पात्र नहीं रखा गया है, मोटे–मोटे अक्षरों में कई अलग–अलग जगह यह बात लिखी गयी है कि ''यहाँ पर धन न चढ़ाए'', यहां पर धन, पैसा, रुपया न चढ़ाए।

दर्शनोपरान्त प्रसाद ग्रहण कर हम आगे बढ़ गये। समय पर रेलवे स्टेशन आ गये, दून एक्सप्रेस से हमें वापस आना था, आधे घंटे लेट से ट्रेन छूटी और रात भर चलती हुई प्रातः 9.30 बजे शाहजहांपुर आ गये। वहाँ से अपने निवास लखीमपुर पहुँचे। बद्री विशाल के दर्शन के साथ ही सम्पूर्ण हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मसूरी यात्रा सुखद एवं यादगार रही। धार्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, एतिहासिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक पर्यावरणीय नजरिये से भी यात्रा आनन्ददायी रही। विभिन्न लोगों से मुलाकात होती हैं, बाते करके अच्छा लगता है, धन तो व्यय होता है पर आनन्द आता है। ईश्वर ऐसे ही सुख और प्रसन्नता सभी को प्रदान करता रहे।

रामजनम बरनवाल
नई बस्ती, लखीमपुर–खीरी

काम करो ऐसे कि –

चलो ऐसे कि धरती हिल जाए,
अड़ो ऐसे कि तूफान थम जाए।
उड़ो ऐसे कि आसमान झुक जाए,
काम करो ऐसे कि इतिहास बन जाए।
क्योंकि किस्मत तो सबकी होती है,
यारों, पर काबिल वहीं, जो उसे मुठ्ठी में कर पाये।

आदित्य बरनवाल, चास
उम्र – 12 वर्ष, वर्ग – 6

पैसा

ये बैंकों में रहता, दूकानों में रहता।
रईशों का अद्भूत मकानों में रहता।।
ये रहता है शहरों की गन्दी गली में।
मचलता है हारों बाजार स्थली में।।
बनाता जो क्षण में है रंकों को राजा।
निकाले कभी होके क्रोधित जनाजा।।
ये अफसर नेताओं पर करता है शासन।
जमाता जुआड़ी के अड्डे पे आसन।।
बिना इसके लगता सभी कुछ सूना।
समय पाके हो जाता तत्क्षण ही दूना।।
घोटालों में इसका जर्बदस्त नाता।
इसको पा के मानव है बनता विधाता।।
इसे लुटने को सभी ने है ठाना।
कचहरी हो, हॉस्पिटल या कोई थाना।।
किसी को बना दे ये पैसा कलन्दर।
तो कोई है बन जाता, क्षण में सिकन्दर।।
इसी के लिए कोई किडनी निकाले।
तो कोई किसी को कहीं बेच डाले।।
है करतब दिखाता एलेक्शन में भारी।
कोई बनता राजा तो कोई भिखारी।।

रामेश्वर प्रसाद बरनवाल
से.नि. केन्द्रिय कर्मचारी
ग्राम+पो.–पुरैना (चनपटिया)

बधाई

दिनांक 14.09.2018 को महामहिम उप–राष्ट्रपति श्री एन. वेंकैया नायडू जी के कर–कमलों से बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, नागपुर के संयोजन में कार्यरत नराकास (बैंक) के अध्यक्ष एवं आंचलिक प्रबंधक श्री विलास आर. पराते को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री निरंजन कुमार बरनवाल को प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम का आयोजन विज्ञान भवन दिल्ली में माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार श्री राजनाथ सिंह जी की अध्यक्षता में की गई। इस कार्यक्रम में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरण रीजेजू एवं श्री हंसराज अहीर की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

बोझ

मेरे सामने ही एक बालिका अपने से अधिक वजन से बालक को उठाने का प्रयास कर रही है। मैंने उससे कहा, 'बेटी ! तुम इसे गोद में लेने की कोशिश कर रही हो ! क्या तुम्हें इसका बोझ नहीं लगेगा ?' बड़े ही भोलेपन से उस बालिका ने कहा, 'यह बोझ नहीं, मेरा भाई है।'

''मौन हो गया एक मसीहा''

पूरा राष्ट्र स्तब्ध रह गया ! सुनकर तेरा महाप्रयाण !
मौन हो गई धरा, परिन्दे भूल गये सप्तम स्वर गान !!
मौन हो गया एक मसीहा, जन जन का जो चहेता था!
काव्य जगत का कुशल चितेरा, मानव मन का प्रणेता था!!
सहस्त्रधार सी उनकी वाणी, काव्य की धारा बहती थी!
मानो अमृत बरस रहा हो, ऐसी उर्जा रहती थी –
ओजपूर्ण व्यक्तित्व था उनका, अटल इरादे ! स्वप्न अटल!
राष्ट्र भक्ति के चिन्तन में ही, बीता जीवन का हर पल !!
अन्तरमन की व्यथा उकेरा, पीड़ा में भी सृजन किया !
सदा रहे ! निर्लिप्त, हृदय से, कटुता को भी सहन किया!!
भाषा की गरिमा और सादगी, का हरपाल निर्वहन किया!
कैसे हो उत्थान राष्ट्र का ? हर पल चिन्तन मनन किया!!
राजनीति के दाँव पेंच, में भी शुचिता का रखा मान!
ऐसा था व्यक्तित्व ! विरोधी भी करते उनका सम्मान!!
नम आंखों से आज ! राष्ट्र दे रहा उन्हें श्रद्धांजलि !
रखा मान तिरंगे का फिर, अपनी आंखें मूंद ली !!
रहे जूझते काल से भी ! झुकने ना दिया तिरंगे को !
खुले नेत्र से जी भर देखा, अन्तिम बार तिरंगे को !!
लिया चैन की सांस ! हास, परिहास का वह रहनुमा चला!
चला मसीहा ! आज सूर्य भी उन्हें विदाई देके – ढला !!
ऐसा जन सैलाब उमड़ते, देखा कभी ना कोई – क्षण !
ठहर गया था वक्त ! ठहर सा गया था, मानो जन जीवन!!

सुभद्रा गुप्ता बरनवाल
मोती सोप, झरिया

वैवाहिक विज्ञापन के पात्र सम्बन्धी सूचना का अभिभावकगण अपने स्तर से पूरी तरह जांच कर संतुष्ट हो लें – सम्पादक

5/19

वधू चाहिए

मनीष कुमार, DOB 1989, 5'10", B.Tech. BPCL में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9973059257

1/19

वधू चाहिए

मुकेश कुमार बरनवाल, पिता स्व0 भोला प्रसाद बरनवाल, 28, 5' 11'', B.Sc. (B.Ed.), राँची में अपना कोचिंग सेन्टर, स्थायी पता – बोकारो थर्मल (कथारा) हेतु गोरी, सिम्पल, स्नातक, गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : गोपाल बरनवाल, भिश्तीपाड़ा, धनबाद, मो.: 9708630384, पंकज बरनवाल मो. : 7277640122

4/19

वधू चाहिए

28 वर्षीय, 5' 6'', रंग गोरा, स्मार्ट, कम्प्यूटर साइंस में Engr., IRS, Income tax, UPSC परीक्षा द्वारा चयनित, असि. कमिश्नर इन्कमटैक्श के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता उमाशंकर प्रसाद, G 5-4, रंकिनी मंदिर के बगल में, कदमा, जमशेदपुर, मो. : 6203925201

1/19

वधू चाहिए

Nitesh Kumar, 30, 5' 11", B.Tech., MBA (IIT Bombay) working in Rockitt Benekiser Group (UK), in Hydrabad with a high seven digit salary. Brother squadron leader in IAF, sister-in-law M.Tech., looking for a suitable good looking, fair, well educated working girl. Contact father Ajay Kumar (Retd. Bank Manager, Munger) settled in Kolkata, Mob. : 9470401404, 8210543291

1/19

वधू चाहिए

राजन बरनवाल, 5' 9'', Aug' 88, Chartered Accountant (CA) & Company Secretary (CS), 3 वर्षो से बंगलोर में 7 अंकों के वेतनमान में कार्यरत हेतु सुशील, सुन्दर एवं पढ़ी–लिखी वधू चाहिए। निवासी रायपुर (छ.ग.), संपर्क करें : मो. : 9630321071, 7000171166

3/19

वधू चाहिए

सचिन कुमार बरनवाल,29, 5' 8'', गोरा, स्मार्ट, MBA, वर्तमान में तीन कम्पनियों का जिला वितरक हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। फोटो, बायो डाटा के साथ संपर्क करें : पिता पवन कुमार C/o कैलाश प्रसाद, सोनार पट्टी रोड, नवादा (बिहार) मो. : 9304458829, 8877209588

2/19

वधू चाहिए

मनोज कुमार बर्णवाल, 30, 5' 10'', गोरा, स्मार्ट, M.C.A., Ey बंगलुरु में साफ्टवेयर इंजिनीयर, T.L. के पोस्ट पर कार्यरत के लिये सुन्दर, सुशील एवं योग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, दुर्गापुर (प.बंगाल), मो. : 9232091149, 8436191005

2/19

वधू चाहिए

VIPIN ADHIR, 30, 5' 11'', स्मार्ट, B.Tech, वर्तमान में Sr. Software Engr. Amazon, Bangalore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5'4'') प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : सत्यनारायण वर्णवाल, धनबाद, (झारखण्ड), मो. : 9973662744, 8409560401, 9431509455

2/19

वधू चाहिए

सुमित कुमार, 30, 5'8'', गोरा, स्मार्ट, होटल मैनेजर, अहमदाबाद में कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए। मांगलिक को प्राथमिकता। फोटो एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, पो.+जिला – जमुई (बिहार), मो. : 8210158990

1/19

वधू चाहिए

अमन प्रकाश, 29, 5' 10'', स्मार्ट, BE, MBA (Symbiosis) Business Analyst TCS मुम्बई में कार्यरत हेतु सुयोग्य वधू चाहिए। प्रोफेशनल को प्राथमिकता। संपर्क करें : अमरनाथ 'छेदी', पटना, मो. : 7323888777, 9852053028

2/19

वधू चाहिए

अभिषेक कुमार, 28, 5' 8'', B.Tech, स्मार्ट, गोरा, Bank of Baroda में Asstt. Manager के पद पर भरुच, गुजरात में कार्यरत हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेश प्रसाद, देवघर, मो. : 9334663084, 7250751754

2/19

वधू चाहिए

प्रकाश कुमार, 30, 5' 7'', स्मार्ट, ग्रेजुएट, Successful Business हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करं : पिता जयकुमर बर्णवाल, दलसिंगसराय, जिला समस्तीपुर, मो. : 8347606062, 7488944171, Email : pra.dena072@gmail.com

1/19

वधू चाहिए

Akash Deep Kamal, 28, 5' 8", fair, smart, B.Com, MBA, own business of medicine (Distributor, C&F agent) requires educated suitable match. Contact father Mr. Manmohan Lal Gupta, Siliguri, 9434750286, Mr. Shashi Prakash Baranwal (maternal uncle), 8709981937

2/19

वधू चाहिए

रवि कुमार बरनवाल, 30, 5' 9'', स्मार्ट, स्लिम, NIT - M.Tech., रेलवे में J.E. के पद पर कार्यरत हेतु संस्कारी, गृहकार्य दक्ष, कम से कम 5' 4'', लम्बी वधू चाहिए। संपर्क करें : फोटो बायोडाटा के साथ पिता सोहन लाल बरनवाल, गिरीडीह (झारखण्ड), मो. : 7549077259, 7091206558 (W.A.)

1/19

वधू चाहिए

कुमार सौरभ, 29, 5' 10'', स्मार्ट, आकर्षक बंगलोर में Senior Software Engr. Siemens कं. में, 10 लाख सालाना में कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी, गृहकार्य दक्ष घरेलु वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता बिन्देश्वरी प्रसाद बरनवाल, हिन्दुस्तान फार्मा ट्रेडर्स, नेताजी रोड, देवघर, मो. : 9431188607, 7070468970

2/19

वधू चाहिए

कुणाल किशोर, 31, 5' 11'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech. (Electronics) IIT खड़गपुर, बंगलोर में In-Mobi कं में उच्च पद पर कार्यरत, आकर्षक वेतन हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर एवं कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता युगल किशोर, अपर आयुक्त (सेवानिवृत), झारखण्ड सरकार, राँची। मो. : 7461999661, 7461999665

1/19

वधू चाहिए

विकास गुप्ता, 27, 5' 4'', स्मार्ट, गोरा, वर्तमान में IDBI Bank तमिलनाडु में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, शिक्षित, गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : बिजय कुमार गुप्ता, ड्रग इंडिया, D-11, महिमा पैलेस, गोविन्द मित्रा रोड, पटना–4, मो. : 9386061522, 8340123281

2/19

वधू चाहिए

राहुल कुमार बरनवाल, 30, 5' 10'', रंग गोरा, B.Com, GENPACT Co. Noida में अधिकारी हेतु लम्बी, गोरी, शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता अशोक कुमार बरनवाल, बैंक मोड़, धनबाद (झारखण्ड), मो. : 9523065709

1/19

वर चाहिए

Required SM for Shilpa non manglik, 30 yrs, 5' 2", smart, slim, wheatish, pure vegetarian, B.Tech., NIT, employed at Hyderabad in US based MNC @ 22.5 LPA. Elder brother AVP, Alumni IIT Alld, IIM Calcutta. Contact father Shanker Ram a Mathematics teacher in KV at Lucknow, 8808770766, srbaranwal@gmail.com

1/19

वर चाहिए

प्रीति परी, DOB1991, 5' 3½", सुशील, गृहकार्य दक्ष, फेयर, MA, B.Ed., हेतु सुयोग्य कार्यरत वर चाहिए। संपर्क करें : पिता प्रदीप कुमार बरनवाल, जसीडीह बाजार (देवघर), मो. : 8797388020, 7209303617

1/19

वर चाहिए

ज्योति रानी, 5'2'', 10.02.1991, गोरी, सुन्दर, यूको बैंक झुमरीतिलैया में Clerk, दो साल से कार्यरत हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : मनोहर कुमार (भाई), झुमरीतिलैया (कोडरमा), असि. मैनेजर, इन्डियन बैंक, कोलकाता, मो. : 8017505977, 7870016324

1/19

वर चाहिए

Neha Kumari, 5', DOB 05/01/1995 fair, smart and slim, Graduate working at AG Office, Patna is looking for suitable match. Contact father Subodh Prasad Barnwal, Sheikhpura (Bihar), Mob. : 9931649662, 7004619281

3/19

वर चाहिए

Kriti Kumari, 27, 5' 3", fair, beautiful, MBA (Finance) IBS Hydrabad, B.E. (Electric & Electronics) presently working as a Sr. Financial Analyst at SG Analytics Pune, is looking for an MBA, CA etc. Contact with biodata and photo to Ashok Kumar (Father), Sheikhpura (Bihar), Mob. : 9006587323, 8676016901, E-mail : akrita2311@gmail.com

1/19

वर चाहिए

श्वेता भारती, 26, 4' 11'', बी.एड, गोरी, सुन्दर, सुशील, शाकाहारी हेतु वर चाहिए। शाकाहारी एवं सरकारी विभाग में कार्यरत को प्राथमिकता। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र कुमार बरनवाल, धनबाद। मो. : 8271318669, 9155379177

6/19

वर चाहिए

डा. रचना भारती, DOB 27.07.1987, 5' 3'', सुन्दर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष MPT (NEURO) IP university, Delhi में सिनीयर फिजियोथेपिस्ट के पद पर कार्यरत हेतु सुयोग्य व शिक्षित वर चाहिए। संपर्क करें : सुरेन्द्र प्रसाद, स्वस्तिक मेडिकल हॉल, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9158927766

1/19

वर चाहिए

अन्नु प्रिया बरनवाल, 28, 5' 4'', MBBS कन्या हेतु MD या MS वर चाहिए। संपर्क करें : नन्दलाल बरनवाल, झाझा, मो. : 9973902540

1/19

वर चाहिए

वैशाली बरनवाल, 25, 5' 5'', Fair, M.Com., कोलकाता से एवं दुर्गापुर में प्राईवेट जॉब हेतु IAS, IPS, Doctor, Engineer वर चाहिए। संपर्क करें : हरिहर प्रसाद बरनवाल, Business, गुरुद्वारा रोड, ऊखड़ा (बर्दवान), मो. : 9531712363, 8597797785

पटना चलो

श्री पी.एल. बरनवाल, पूर्व अध्यक्ष, संरक्षक, श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा एवं श्री बैजनाथ प्रसाद बरनवाल, उपाध्यक्ष, झारखण्ड बरनवाल वैश्य महासभा, डुमरी द्वय व्यक्ति ने झारखण्ड तथा बिहार राज्य एवं पड़ोसी राज्यों के मोदी बरनवाल समाज के सदस्यों को आह्वान किये कि दिनांक 20 जनवरी 2019 को बरनवाल राजनीतिक प्रतिनिधि सम्मेलन पटना के बापू सभागार, गाँधी मैदान में ऐतिहासिक सम्मेलन होने जा रहा है उसमें सभी मोदी बरनवाल बन्धु अधिक संख्या में उपस्थित होकर सफल करने में सहयोग दें।

मोदी बरनवाल सम्मेलन का उद्देश्य समाज की एकजुटता पर बल दिया जाना, सुरक्षा, बरनवाल समाज को राजनीति में भागीदारी सह केन्द्रीय स्तर पर ओ.बी.सी. का आरक्षण में शामिल करना प्रमुख मांग को राजनीति प्रतिनिधि सम्मेलन के माध्यम से सभी राजनीतिक दलों के समक्ष रखा जायेगा। जो राजनीतिक दल बरनवाल मोदी महासभा की इस मांग को पूरा करेगा उसे ही बरनवाल मोदी समाज का साथ मिलेगा।

राजनीति भी किसी जाति और विशेष वर्ग की जागीर नहीं है। महाराजा अहिबरन सूर्यवंशी थे और हम उनके वंशज। बरनवाल समाज तराजू उठाना भी जानते हैं और समय आने पर तलवार उठा सकते हैं। समाज की उपेक्षा किसी कीमत पर बर्दाश्त नहीं होगी चाहे वह किसी भी जन प्रतिनिधि या दल के द्वारा किया जायेगा। जो जन प्रतिनिधि बरनवाल मोदी समाज की उपेक्षा करेगा उसे चुनाव में सबक सिखाने का कार्य समाज के लोग करेंगे। समय आ गया है पूरा बरनवाल वैश्य समाज अब राजनीतिक हिस्सेदारी लेने को तैयार रहें।

हमें ऐसे बिखरे रहने से बात नहीं बनेगी। हमें यह लगातार प्रयास करना चाहिए कि पूरा बरनवाल मोदी वैश्य समाज कैसे एक धागे में पिरोया जाय। हमें 36 आंकड़े के बदले आपस में 63 आंकड़े के तरह मिलना है। हमें अपने समाज में शिक्षा पर भी बल देना पड़ेगा। हम जब शिक्षित और जागरुक होंगे तभी हम अन्य चीजों पर अपनी दावेदारी मजबूत कर पायेंगे। हम सुसंगठित होकर ही राजनीतिक रुप से सबल हो सकते हैं इसके लिए समाज में रानीतिक चेतना जगाने की जरुरत है।

जय अहिबरन   बरनवाल मोदी समाज जिन्दाबाद

बैजनाथ प्रसाद बरनवाल

उपाध्यक्ष

झारखण्ड राज्य बरनवाल वैश्य महासभा

डुमरी (गिरिडीह)

शोक समाचार

1. श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा के पूर्व विशेष आमंत्रित सदस्य तथा गिरीडीह जिला के एवं स्थानीय गिरीडीह निवासी रतन लाल बरनवाल का देहान्त अपने आवास में दिनांक 12/01/2019 को अचानक हो गई। रतन लाल बरनवाल, गिरिडीह बरनवाल समाज के काफी सक्रिय सदस्य थे, इन्होंने कई गरीब लड़कियों का विवाह सम्पन्न कराने में आर्थिक सहयोग दिये इन्होंने अपने दादा जी प्रयाग मोदी के नाम सिरसिया में लाखों रुपये खर्च कर शिव मंदिर का नव निर्माण कराया साथ गिरिडीह कचहरी के प्रांगण में श्री श्री 108 श्री बजरंग बली मन्दिर का भी नव निर्माण कराया। वे हमेशा समाज के संगठन, बरनवाल सभा, बरनवाल धर्मशाला गिरिडीह में अधिक आर्थिक सहयोग किए एवं देख रेख पर ध्यान देते रहे।

इनके आवास में अखिल भारतवर्षीय बरनवाल सभाके पूर्व अध्यक्ष श्री पी. एल. बरनवाल, झारखण्ड बरनवाल प्रदेश उपाध्यक्ष श्री बैजनाथ प्रसाद बरनवाल, स्थानीय अशोक कुमार फौजी, बी. बी. लाल, जय प्रकाश बरनवाल, अध्यक्ष श्री सदानन्द बरनवाल, स्थानीय विधायक श्री विश्वनाथ शाहाबादी, अन्य प्रमुख लोग उपस्थित होकर उनके आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उनके दुखी परिवार तथा पत्नी को दु:ख में साहस एवं ढाढ़स रखने की सलाह दिए।

श्री पी.एल. बरनवाल, पूर्व अध्यक्ष
सह–वरीय अधिवक्ता, धनबाद
बैजनाथ प्रसाद बरनवाल, उपाध्यक्ष
झारखण्ड प्रदेश बरनवाल वैश्य महासभा
डुमरी (गिरिडीह)

2. रतन लाल बरनवाल अग्रज डा. रंजित कुमार बरनवाल गत रात्रि 11/12.01.2019 को गिरिडीह में अपने आवास में हो गया। आप बहुत दिनों से महासभा से जुड़े रहे। आप दानदाता रुप में आगे रहे। उनके निधन से समाज को क्षति हुई। उनके शोक सन्तप्त परिवार को शोक सहने की भगवान शक्ति प्रदान करें।

बालेश्वर प्रसाद
सम्पादक, बरन संकल्प

3. बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि दिनांक 28/12/2018 को राजेन्द्र मोदी सरिया का देहान्त उनके घर पर हो गया। वह एक कुशल सामाजिक एवं राजनीतिक व्यक्ति थे, भगवान उनके आत्मा को शान्ति दें।

पी. एल. बरनवाल
अधिवक्ता, धनबाद

बासन्ती हवा

चल पड़ी मदभरी अब बासन्ती हवा
आ भी जाओ चले आओ आ जाओ तुम
तार वीणा के बजने लगे उर में अब
पास आकर इन्हें झन–झना जाओ तुम।
यूं न उद्गार मन की दबाती रहो
मन के उपवन में आके समा जाओ तुम
यह घड़ी है सुहानी बड़ी रस भरी
गीत बनकर इसे गुनगुना जाओ तुम।
तेरे अधरों की मुस्कान पे लुट गया
अब अधर से अधर को मिला जाओ तुम
तानें देती है दुनियां तो गम न करो
उनके तानों पे अब मुस्कुरा जाओ तुम।
पट खुले हैं हृदय के तुम्हारे लिये
जुगनुओं की तरह जगमगा जाओ तुम
आगमन पर तुम्हारे खुशी वार दूं
फूल बनकर अगर खिल खिला जाओ तुम।
तोड़ कर सारे रश्मों की जंजीर को
मन के आकाश में झिलमिला जाओ तुम
ऐसे अवकास आते नहीं सर्वदा
इन क्षणों में स्वयं को लुटा जाओ तुम।

मोहन प्रसाद बरनवाल

बरन संकल्प के न्यासी सदस्य बनें

2833. श्री अमित कुमार (8986875107)
5 डी – 2042, बी.एस. सिटी,
बोकारो – 827006

2834. ई. राजेश बरनवाल (8210200448)
401, आद्या निवास, कवि रमन पथ
नागेश्वर कॉलोनी, बोरिंग रोड, अपोजिट
रविशंकर प्रसाद संसद के पीछे, पटना – 800001

2835. सुश्री विनीता मोदी (9525093276)
जय माता दी गर्ल्स होस्टल
एचआईजी – 31, हाउसिंग कॉलोनी,
धनबाद – 826001

2836. श्री प्रमोद कुमार बरनवाल (7738234448)
S/o श्री कृष्णदेव प्रसाद, हिल व्यू नॉर्थ
लोरेटो पारा, नियर संत पॉल क्लब
आसनसोल – 713304

2837. श्री मदन लाल (9019596716)
परिधान, लाल चौक, मेन रोड
नवादा – 805110

2838. श्री विनोद कुमार बरनवाल (9431369442)
श्री भवानी टेक्टाइल, लक्ष्मी मार्केट
बी.देवघर – 814112

2839. श्री सत्येन्द्र कुमार बरनवाल (8877009493)
फेमिना ब्यूटी पार्लर, बैद्यनाथ ट्रेडिंग के पीछे
नियर यमुना जोर पुल, सरावाँ रोड
बी. देवघर – 814112

2840. श्री बाबुलाल बरनवाल (9122026160)
विकास हार्डवेयर सोप, महुदा बाजार
पो. : महुदा, धनबाद – 828305

2841. श्री विनोद कुमार बरनवाल (9475938563)
फूलबगान मोड़, मु.+पो. : पांडेश्वर
जिला : बर्धवान (प. बंगाल) – 713346

2842. श्री शिवकुमार बरनवाल (9431504595)
तारा मेडिकल हॉल, डोमचांच
कोडरमा – 825418

2843. श्री विक्की भारती (9712008800)
एमआईजी – बी/12, हाउसिंग कॉलोनी
नियर दुर्गा मन्डप, पुलिस लाइन रोड
धनबाद – 826001

2844. श्री अतीश कुमार बरनवाल (9931541815)
डेनिम प्वाइंट, 1st Floor, केबी मेंशन
रतनजी रोड, पुराना बाजार, धनबाद –826001

2845. श्री मोती लाल (8340609573)
मुसापुर, वार्ड 2, नियर धर्मपुर हाई स्कूल
समस्तीपुर – 848101

2846. श्री कृष्ण कुमार बरनवाल (8651613442)
सुजीत मेडिकल हॉल, खंदक मोड़
बिहारशरीफ, नालंदा – 803101

2847. श्री संतोष कुमार बरनवाल (9471971526)
नियर शिव मंदिर, टेकलाल महतो कॉलोनी
नूतन नगर, चौक–3, कोर्रा, हजारीबाग–825303

2848. श्री संतोष बरनवाल (7020590410)
Bldg 8, Flat 105, Simplycity, Handewadi
Road, Hadapsar, Pune - 811028

2849. श्री अनिल कुमार बरनवाल (9431875099)
औषधालय मेडिकल, पुराना सदर हॉस्पिटल
के सामने, टावर चौक, बी. देवघर – 814112

2850. श्री अरविन्द कुमार (9423372795)
46/13, टाइप डी, BARC कॉलोनी, बोइसर
पो. : TAPP, जिला : पालघर – 441504

2851. श्री सुनील कुमार बरनवाल (9835474472)
सुरभि ज्वेलर्स, बजाजा रोड,
माखनटोली गली, गया – 823001

2852. श्री संतोष कुमार बरनवाल (9934830349)
कमल मेडिको, झाउगंज, नीयर पोस्ट ऑफिस
पो. : पटना सिटी – 800008

2853. श्री सत्यनारायण प्रसाद (9430756921)
Flat : N/15, चतुर्भुज टावर, आशियाना गार्डेन
फेज – 4, चिरा चास, बोकारो – 827013

2854. श्री राकेश बरनवाल (8960227465)
परमेश्वरी भवन, बी 21/198–3, कमाच्छ
वाराणसी – 221010

2855. श्री हरिहर प्रसाद बरनवाल (9531712363)
भवानी स्टोर, न्यू मार्केट, पो. : उखरा
बर्धवान – 713363

2856. श्री संजीव कुमार
अमर स्टोर, सदर बाजार, चास, बोकारो

2857. श्री रामेश्वर प्रसाद बरनवाल (8969996024)
मु.+पो. : ओल्ड गोसाई, भाया – चनपटिया
पश्चिमी चंपारण – 845449

2858. श्री कुमार बिरेन्द्र (9431736137)
कुमार ज्वेलर्स, महावीर चौक, चास, बोकारो

2859. श्री सतीश प्रसाद (7903043706)
लाल मोहन पेट्रोल पम्प, 1487, न्यू रोड
फुसरो, जिला – बोकारो – 829144

2860. श्री रमेश बरनवाल (8957968372)
SA 4/184, 11Q, विश्वनाथपुरम कॉलोनी
दौलतपुर रोड, पांडेपुर, वाराणसी (उ.प्र.)

2861. श्री शेखर प्रसाद, प्रसाद इलेक्ट्रीकलस, बड़ा
गुरुद्वारा के सामने, बैंक मोड़, धनबाद– 826001

2862. श्री यशंवत कुमार
O/o Sr Chief Engineer (C), BSNL
Jharkhand Civil Zone, C - 409/410,
3rd Floor, ARTTC Bldg., Nr.Jumar Bridge
Ranchi - 835217

2863. श्री संजय मोदी
लिंक रोड, मेन गेट, डीएसपी, दुर्गापुर–3 (WB)

2864. श्री दिनेश कुमार बरनवाल
लिंक पार्क, लिंक रोड, डीएसपी
मेन गेट, दुर्गापुर – 3 (WB)

2865. श्री मनोज कुमार बरनवाल, गोधुली बाई लेन
मोदी दुकान के सामने, आसनसोल – 1

2866. श्री ध्रुवचन्द प्रसाद (7250225927)
नवीन इन्डिया ट्रेडर्स, नीयर चास महिला
कॉलेज, चास, बोकारो – 827013

बड़े धुम–धाम से मनाई गई महाराजा अहिबरन जी की जयन्ती

भाटपार रानी देवरिया नगर में बर्णवाल समाज द्वारा महाराजा अहिबरन जी की जयन्ती माँ वैष्णो मैरेज हॉल में बड़े धूम धाम से मनाया गया। नगर में हाथी, घोड़ा तथा गाजे–बाजे के साथ शोभा यात्रा निकाली गयी। शोभा यात्रा के दौरान नगर में पुष्प एवं जलपान से स्वागत हुआ। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर संरक्षक राधेश्याम वर्णवाल, शशिभूषण वर्णवाल, सतीश वर्णवाल, शक्तिदेव बरनवाल, सत्यव्रतजी बरनवाल, जयप्रकाश वर्णवाल, अध्यक्ष लल्लन जी बरनवाल, मंत्री संजय वर्णवाल आदि ने महाराज अहिबरन के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित किया।

सरस्वती वन्दना अहिबरन वंदना स्वागत गीत भाव नृत्य के द्वारा बर्णवाल समाज के बच्चों ने मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबको आनंदित किया।

समारोह के मुख्य अतिथि डा. सोरभ वर्णवाल ने कहा बरनवाल समाज सभी सामाजिक कार्यो में आगे बढ़कर हिस्सा लेता है। विशिष्ट अतिथि भाटपार रानी के विधायक डॉ. आशुतोष उपाध्याय ने कहा वर्णवाल समाज का शिक्षा एवं सामाजिक कार्यो में अनुकरणीय योगदान है। समारोह का सजग संचालन करते हुए विवेक वर्णवाल ने कहा वैश्य समाज, समाज की धुरी है। कार्यक्रम को सफल बनाने में कोषाध्यक्ष अशोक वर्णवाल, दीपक वर्णवाल, राकेश वर्णवाल, अरविंद वर्णवाल, रंजीत वर्णवाल, अखिलेश वर्णवाल, सत्यप्रकाश वर्णवाल, सत्यदेव वर्णवाल, गोविन्द वर्णवाल, आशिष वर्णवाल, डॉ. प्रमोद वर्णवाल, अजय वर्णवाल, मनीष वर्णवाल, काशीनाथ वर्णवाल, विकास वर्णवाल, राजेश वर्णवाल, नगर अध्यक्ष संजय गुप्ता, सुनील जायसवाल उर्फ पप्पू शारदा मद्धेशिया आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शक्तिदेव बरनवाल
भाटपार रानी, देवरिया

एकता की शक्ति

हम सभी एक सामाजिक प्राणी है। ऐसे में, परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सबों के बीच एक सामंजस स्थापित रहने पर सामाजिक, आर्थिक स्थिति हमेशा अच्छा रहता है। जिसमें एकतापूर्ण परिवार का रौल ही सबसे अधिक महत्व रखता है। परिवार के प्रत्येक सदस्यों में एकात्मकता उस परिवार के भविष्य के निर्माण में सहायक होता है। परिवारों के समुह से ही मुहल्ला, गाँव, शहर तथा देश भी क्रमिक रुप से जुड़ते जाते हैं।

यदि परिवार के प्रत्येक सदस्यों में तालमेल बना रहता है, तो कोई भी परिवार रुपी गाड़ी अपने उद्देश्य और सुख–शान्ति में चार चाँद लगाने जैसा रुप ले लेता है। किसी भी परिवार रुपी गाड़ी में पति–पत्नी का रौल दो पहिये जैसा होता है। किसी भी गाड़ी के एक पहिया में कुछ गड़बड़ी आ जाती है तो गाड़ी के गति में रुकावट पैदा हो जाती है। क्योंकि यह सही पहिया से गाड़ी में गति तेजी से अपना अस्तित्व नहीं ले पाता है। यदि दोनों पहियों की चाल एक समान व ठीक हो तो वह गाड़ी हमेशा गतिमान रहता है। उसी प्रकार परिवार की पृष्टभूमि होती है। आपसी समझ और सद्भावना की कमी परिवार के गति में अवरोध पैदा करता रहता है।

एक कहावत है – 'जहाँ सुमति वहाँ सम्पत्तिनाना, जहाँ कुमति वहाँ विपत निदाना।' यदि पति–पत्नी दोनों समझदारी से एक दूसरे के विचारों को सही ढंग से समझ नहीं पाते हैं तो वहाँ तनाव पैदा होता रहता है। जो परिवार रुपी मकान के नींव को कमजोर बनाता रहता है। इसके लिए पति–पत्नी के अलावा परिवार के सभी सदस्यों को आपसी प्रेमभाव में हमेशा वृद्धि करते रहना चाहिए। सभी को हँसते–हँसते व खुशीमन से किसी भी समस्या का समाधान निकालना चाहिए। इससे परिवार के टूटने से बचा जा सकता है। सभी को नैतिकता का सहारा लेते हुए परिवार के सुख शांति का हमेशा ध्यान रखना आवश्यक है। परिवार के मेल–मिलाप से ही समाज राष्ट्र का रुप भी सही हो सकता है।

एकता में एक बड़ी शक्ति निहित है। जिससे सभी को बल मिलता है। एकता के बल पर ही किसी परिवार, समाज, राष्ट्र अथवा राजनीतिक पार्टी को हमेशा सहारा मिलता रहता है। यदि एकता न हो तो कोई भी कार्य अपना सही स्वरुप नहीं ले सकता है। इसे समझने के लिए मैं एक कहानी का उदाहरण दे रहा हूँ।

लगभग 150 वर्ष पूर्व में एक गाँव में एक गरीब परिवार रहता था। उसके आय का साधन बहुत ही सीमित था। जिसके कारण उनलोगों ने खाने–पीने, रहने आदि बातों की समस्या जटिल थी। ऐसे में उस परिवार के मुखिया ने उस स्थान को छोड़ दूसरे जगह पर जाकर कमाई करने का सोचा। एक दिन सपरिवार वह वहाँ से निकल पड़ा। चलते–चलते वे सभी एक बिरान जंगल में पहुँचे। सभी को भूख लगने लगी। मुखिया ने अपनी पत्नी तथा बच्चों के बीच काम बाँट दिया। कोई सूखी लकड़ी चूनने लगा तो कोई पानी लाने चला गया। अन्न तो सभी घर से लेकर चले थे। सभी ने मिल–जुल खाना बनाया और भोजन बनने के बाद सभी ने खा–पीकर भूख की पूर्ति कर लिया।

वहीं पर एक विशाल बरगद का पेड़ था। जिस पर एक वन देवता बास करते थे। उन्होंने मुखिया तथा उसकी पत्नी के बीच गरीबी संबंधी आपसी बातों को सुना। जिसके कारण मुखिया अपने परिवार के साथ काम के तलाश में कहीं जा रहे थे। इनलोगों के एकता देखकर वन देवता इस परिवार से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उनलोगों को कुछ सोने के गहनों से सहायता किया। तब वे लोग पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट गये। गहनों को बेचकर कुछ धंधा करने लगे और मिल–जुलकर रहने लगे। जिससे वे लोग अब सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे।

उसी स्थान पर एक दूसरा धनी व्यक्ति सपरिवार रहता था। लेकिन वह व्यक्ति पैसा धन का बड़ा लोभी था। जब उसने पहले आदमी को गरीब से अमीर होते देखा तो उसके मन में उससे धनी व्यक्ति बनने का राज

मालूम करने की इच्छा जागृत हो गई। उसने पहले व्यक्ति से उसके धनी होने का राज पूछा। पहला आदमी बहुत सीधा–साधा व्यक्ति था। उसने उस धनी व्यक्ति को वन देवता के बारे में सभी बातों को सच्चाई से बता दिया।

अब वह धनी लोभी व्यति अधिक धन पाने की लालच में अपने परिवार को लेकर एक दिन अपने घर निकल पड़ा। चलते–चलते वे लोग पहले व्यक्ति के बतलाये स्थान पर पहुँचे। लेकिन जब उसने अपनी पत्नी और बच्चों को कोई काम करने को कहा तो वे सभी तैयार नहीं हुए। विशेष दबाव देने पर वे सभी आपस में ही झगड़ने लगे। धनी के बातों से पता चला कि वे सभी धन पाने के लिए वहाँ आये हुए थे। वन देवता ने सोचा कि ऐसे परिवार को सहायता करना बेकार है जिन लोगों में आपसी एकता नहीं है और वे सभी सिर्फ धन के लोभी हैं। उन्होंने उस लोभी परिवार को वहाँ से भागने का दबाव दिया। ऐसा नहीं करने पर उस परिवार को सिर्फ नुकसान ही नुकसान होने का डर दिखाया। तब उनलोगों को जान जाने की भी संभावना समझ में आया। ऐसे में, वन देवता के कोप से बचने के लिए वे लोग भाग खड़े हुए और फिर अपने घर वापस पहुँच कर ही शांत हो पाये।

अब देखिये कि एक परिवार ने अपने एकता के बल पर बहुत कुछ पा लिया। जबकि दूसरा लोभी परिवार को सिर्फ खाली हाथ ही वापस लौटना पड़ा। एकता सिर्फ धन–दौलत के बल पर ही नहीं मिल सकता है। अच्छी वैचारिक वातावरण से ही एकता में शक्ति सुदृढ़ बन पाता है।

उसी प्रकार किसी परिवार, समाज और राष्ट्र की एकतात्मकता शक्ति से ही सभी प्रकार से भला हो सकता है और सब तरह से सुख समृद्धि आ सकती है। यह जरुरी है कि परिवार, देश व किसी समाज में सभी सदस्यों व लोगों की मानसिकता एक जैसी होगी तथा सभी भावनाओं में एकरुपता से ही एकता की अच्छी भावना बन सकती है। यह सही है कि आप सभी सत्य के बल पर ही आपस में खुशी पा सकते हैं।

प्रताप नारायण बरनवाल
कैंमा शिकोह, पटना सिटी

कूट का वो डब्बा

अलमारी से झांकता था वो कूट का डब्बा अक्सर
मुंह चिढ़ाता मुझको, बुलाता बाँहे पसार कर।
खोला बर्षो पर मैंने उसका फूलों से अंकित ढक्कन
मेरे कई पते थे उसमें, कैद था मेरा बचपन।
चिट्ठी और पत्रों का था वो एक अनमोल खजाना
इतनी यादें हर पन्ने पर, हर शब्द एक फसाना।
छोटी सी एक मैं थी और मेरे बूढ़े दादाजी
हर हफ्ते की खबर बताते, बाँटते कहानियां वो अनुभवी।
नीले इन्लैंड पर छपा था, मेरे बचपन के घर का पता।
देखते ही चक्षु भींग गए, स्मृतियों का बाढ़ बह चला।
और भी थे कुछ रंग–बिरंगे, हर आकार के चिट्ठे
बचपन के खट्टे–मीठे फुर्सत वाले लम्हें समेटे।
छोटे–छोटे भाई–बहन जो छुट्टियों में मिला करते थे
पड़ोस के घर के दोस्त जो शहर छोड़ कर चले गए थे।
मासूम से शब्द बिखर रहे थे हर पन्ने पर
खुसर–फुसर कर रहे थे वो कानों में फुसफसा कर।
एक पता कॉलेज का भी था जहाँ मिली मैं खुद से
डाकिए का इंतजार वहाँ होता बेसब्री से।
बूढ़ा डाकिए खाकी पहने, साइकिल के पहिए घुमाता
झोले में उसके होती –
दुनिया भर के सपने, माँ की ममता,
पिता का स्नेह और अपने घर का अहाता।
कुछ खत ऐसे भी मिले, सुगंधित और गुलाबी
प्रेम से नम अक्षरों को गढ़ रही थी स्याही।
उमड़–घुमड़ और उथल–पुथल झिंझोड़ रहे थे मन
क्या जादू बिखेरते थे तब तुम्हारे कलम।
याद आया कैसे हर खत का होता इंतजार
कागज की कुरकुरी आवाज और खुशबू की झंकार।
हर पाती की होती थी प्यारी सी कहानी
हर पंक्ति होती थी धड़कते दिल की जुबानी।
बन्द किया मैंने वो अपना अनूठा कूट का डब्बा
बन्द किया मैंने ढेरों यादों का पुलिंदा।
बन्द किए मैंने भारी पलकों से आँखें
काश कि ऐसा होता, अब भी चिट्ठियाँ आते।

रीना कंचन
W/o शेखर कंचन, गुड़गांव

हेल्दी रेसिपी

पालक कढ़ी

सामग्री – कढ़ी के लिए – दही 1 कप, बेसन 2 चम्मच, हल्दी 1/2 चम्मच, नमक स्वादानुसार, **पेस्ट बनाने के लिए –** पालक 1 कप, मिर्च 1, अदरक 1 टुकड़ा, जीरा 1 चम्मच, **छौंक के लिए –** जीरा 1 चम्मच, सरसों 1 चम्मच, हींग चुटकी भर, करी पत्ता 10, लाल मिर्च पाउडर 2 चम्मच, तेल आवश्यकतानुसार।

विधि – पालक को अच्छी तरह से धो लें। कुकर में पालक, मिर्च, अदरक, जीरा और जरा–सा पानी डालें और एक सीटी लगाएं। कुकर का प्रेशर अपने–आप निकलने दें। उबले हुए पालक को ग्राइंडर में डालकर पीस लें। एक बाउल में दही, बेसन और हल्दी पाउडर डालें। अच्छी तरह से फेंट लें। पैन को गर्म करें और उसमें दही वाला मिश्रण, आधा कप पानी और पालक की प्यूरी डालें। अच्छी तरह से मिलाते हुए धीमी आंच पर कढ़ी को लगातार चलाते हुए पकाएं। जब कढ़ी उबलने लगे तो उसमें स्वादानुसार नमक मिलाएं। इस बात को ध्यान में रखें कि आप कढ़ी को जितना ज्यादा पकाएंगी, उसका स्वाद उतना ही ज्यादा बेहतर होगा। जब कढ़ी तैयार हो जाए तो गैस बंद कर दें। अब एक छोटे–से तड़का पैन में तेल गर्म करें और उसमें जीरा और सरसों डालें। जब जीा पकने लगे तो तेल में करी करी पत्ता, हींग और लाल मिर्च डालें। कुछ सेकेंड बाद इस तड़का को तैयार कढ़ी में डालकर मिलाएं। रोटी और आलू–शिमला मिर्च की सब्जी के साथ इस कढ़ी को गर्मागर्म पेश करें।

हरियाली गोभी

सामग्री – गोभी के लिए – गोभी के फूल 2 कप, हल्दी पाउडर 1/2 चम्मच, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार, हरियाली मसाला के लिए – पालक 500 ग्राम, बारीक कटा टमाटर 1, कद्दूकस किया लहसून 2 कलियां, कद्दूकस किया अदरक 1 चम्मच, बीच से कटी मिर्च 2, जीरा 1/2 चम्मच, दालचीनी 1 टुकड़ा, जीरा पाउडर 1 चम्मच, हल्दी पाउडर 1/4 चम्मच, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, क्रीम 2 चम्मच, बटी 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार

विधि – पालक को अच्छी तरह से धोकर काट लें। प्रेशर कुकर में बटर को गर्म करें और उसमें जीरा और लहसुन डालकर कुछ सेकेंड तक भूनें। अब कुकर में दालचीनी, हरी मिर्च, पालक, टमाटर,जीरा पाउडर, गरम मसाला पाउडर और हल्दी पाउडर डालें। कुछ सेकेंड तक पालक को भूनें। अब कुकर में एक चम्मच पानी डालकर मिलाएं। कुकर बंद करें और एक सीटी लगाएं। गैस ऑफ करें और कुकर को पानी के नीचे रखकर उसका प्रेशर तुरंत निकालें। ऐसा करने से पालक का हरा रंग बरकरार रहेगा। पालक जब पूरी तरह से ठंडा हो जाए तो इसे ग्राइंडर में डालकर बारीक पेस्ट तैयार कर लें। कड़ाही में तेल गर्म करें और उसमें गोभी, नमक और हल्दी पाउडर डालें। कुछ सेकेंड बाद कड़ाही में हल्का–सा पानी छिड़क दें। ढककर गोभी को पांच मिनट तक पकाएं। गरम मसाला पाउडर छिड़कें। गोभी को चार–पांच मिनट और पकाएं व गैस ऑफ कर दें। गोभी को कड़ाही से निकाल लें। उसी कड़ाही में पालक की तैयार ग्रेवी डालें और मध्यम आंच पर पकाएं। क्रीम को फेंट कर पालक में मिलाएं। सर्विंग बाउल में पालक वाली ग्रेवी डालें और उसके बीच में गोभी के फूल रखें। रोटी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

– संकलित

अनुभूत योग–माला

घरेलू दवाइयाँ

कण्ठमाला – चिरचिटा (औंधा) की जड़ के 8–10 टुकड़े लेकर उनकी माला बना लें और उसे रोगी के गले में पहना दें, कुछ दिनों में कण्ठमाला ठीक हो जाती है।

कमर–दर्द – खसखस और मिश्री दोनों समभाग कूट पीस लें। 10 ग्राम प्रतिदिन गर्म दूध के साथ पीने से कमर का दर्द जाता रहता है।

कर्ण रोग – प्याज का रस थोड़ा–सा गर्म करके एक या दो बूँद कान में डालें। इससे कान का बहरापन, कान का दर्द, कान का बहना आदि रोग दूर हो जाता है।

कर्णशोधक – सुहागा बारीक पीस लें और कान में 2 ग्रेन डाल–कर ऊपर से नींबू के रस की 5–6 बूँद निचोड़ दें। तुरन्त एक प्राकृतिक गैस पैदा होगी और सारी मैल घुलकर बाहर निकल आयेगी।

कष्टार्तव (मासिक का कठिनता से होना) – नागकेसर असली 50 ग्राम और मिश्री 50 ग्राम लें। दोनों को कूट–पीसकर कपड़छन कर लें और 6–6 ग्राम की पुड़िया बना लें। एक–दो मास निरन्तर सेवन करने से ऋतु–विकार, कमर और पेडू आदि का दर्द जाता रहेगा।

कनखजूरे का चिपटना – कनखजूरे के चिपट जाने पर तो कड़वा तेल डालें। कनखजूरा टुकड़े–टुकड़े होकर मर जाएगा। अनुभूत हैं।

कायाकल्प – आधा किलो निर्गुण्डीमूल चूर्ण और 1 किलो मधु ले लें। दोनों को खरल में घोटें। जब एकजान हो जाएँ तब एक हाँडी में भरकर उसका मुँह कपड़–मिट्टी करके बन्द कर दें और धान के बीच रख दें। एक मास बाद निकालकर प्रतिदिन 10 ग्राम दवा लें। इसके सेवन से शरीर का रंग सोने के समान हो जाता है, दृष्टि गिद्ध के समान हो जाती है, सब रोग दूर हो जाते हैं। बुढ़ापा आक्रमण नहीं करता। बाल काले रहते हैं।

काँच निकलना – इमली के बीजों की गिरी का चूर्ण 4 ग्राम से 10 ग्राम तक मक्खन के साथ मिलाकर रोगी को खिलाएँ। 1–2 मास सेवन करने से रोग दूर हो जाएगा।

काली खाँसी – कंजा, बड़ी पीपल, छोटी पीपल, बड़ी हरड़, चारों 1–1 नग लें और नमक 8 ग्रेन, बाँसे के पत्ते 2.5, इस सबको कूट कर 125 ग्राम पानी में मिट्टी के बर्त्तन में पकाएँ। चौथाई पानी रहने पर उतार लें तथा छानकर मिट्टी के बर्तन में रख लें। 3–3 ग्राम दिन में चार बार दें। काली खाँसी की शर्तिया दवा है।

कुकरे – फिटकरी, नौशादर, कलमी शीरा, नीला थोथा, प्रत्येक 25 ग्राम। इन सबकी खील बनाकर बारीक पीस लें। यह 4 ग्राम दवा लेकर इसमें 3 ग्राम भीमसेनी कपूर मिला लें, फिर इन दोनों को 25 ग्राम मधु या गिल्सरीन में मिलाकर लगाने से कुकरे सदा के लए जड़मूल से नष्ट हो जाते हैं।

कुष्ठ – भाँगरा और बकुची का चूर्ण 6 ग्राम गर्म पानी के साथ फाँकने से और इन दोनों को 21 दिन तक पीसकर लेप करने से कुष्ट रोग जड़ से निकल जाता है।

नोट – औषधि–सेवन काल में नमक का प्रयोग न करें।

उल्टी – 25 ग्राम गेरु के टुकड़े लेकर आग पर गर्म करें, फिर इसे 250 ग्राम पानी में बुझाएँ। दो–तीन बार ऐसा करके यह पानी पिलाएँ। कैसी ही उल्टी आ रही हो, बन्द हो जाएगी।

क्षय नाशक – बकरी का दूध 250 ग्राम, नारियल कसा हुआ 10 ग्राम, लहसुन पीसा हुआ 6 ग्राम, ये तीनों चीजें पका लें और प्रातः–सायं पिला दें।

खाँसी, जुकाम एवं नजला – काली मिर्च 25 ग्राम, पीपल छोटी 15 ग्राम, यव (जौ) क्षार 15 ग्राम, अनार का छिलका 100 ग्राम, गुड़ पुराना 200 ग्राम, इन सबको कूट–पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। एक–एक गोली मुँह में डालकर चूसरे रहें। खाँसी के लिए अत्युत्तम योग है।

खाज – 1. 50 ग्राम बकरी की मैंगनी लेकर 200 ग्राम सरसों के तेल में ओटाकर छान लें। इस तेल की सारे शरीर पर मालिश करने से तमाम उम्र खुजली नहीं होगी।
2. नींबू का रस और चमेली का तेल, दोनों को समभाग मिलाकर मालिश करने से सूखी खुजली जाती रहती है।

– संकलित